अक्टूबर-२०१७ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०५ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०१७

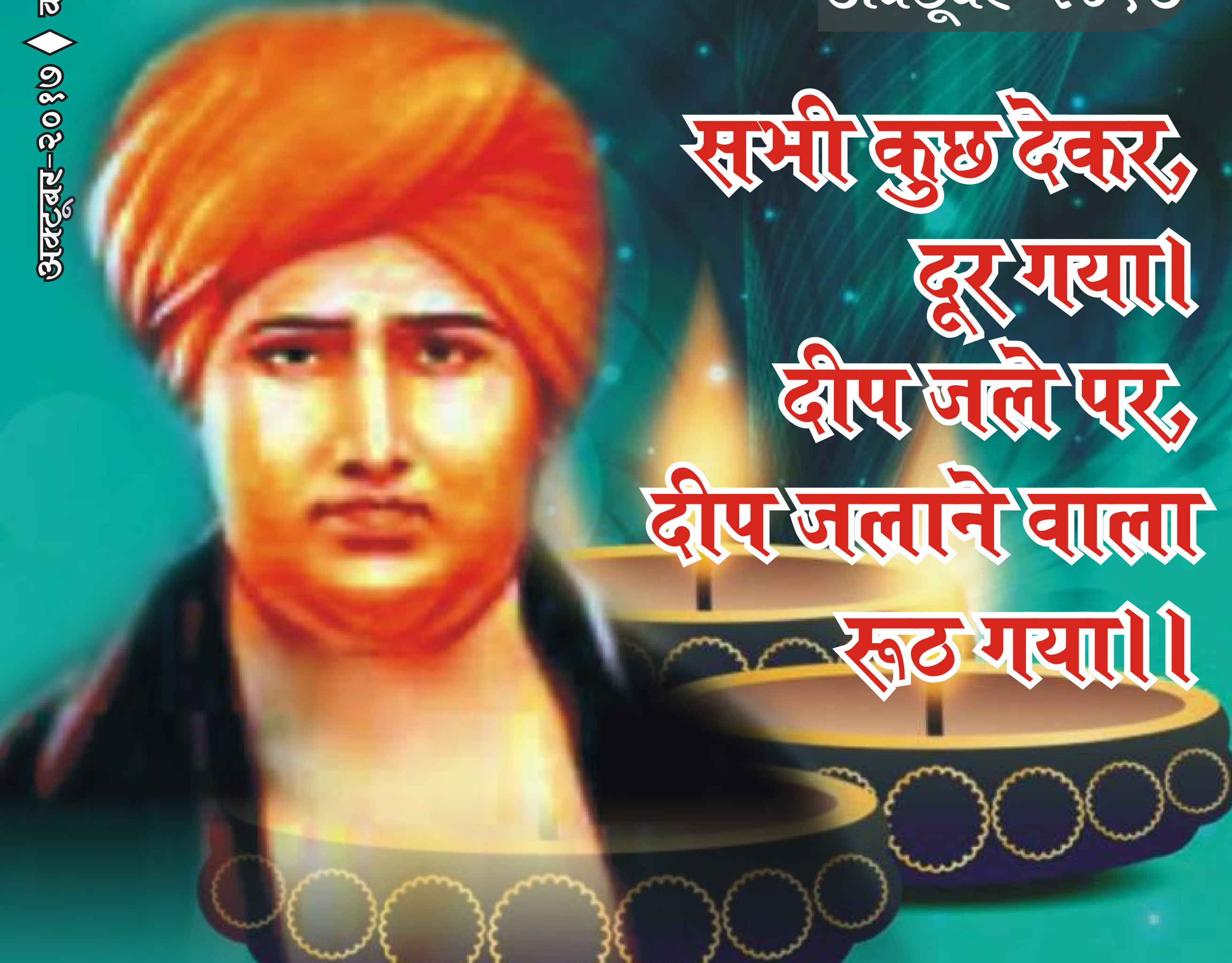

सभी कुछ देकर, दूर गया। दीप जले पर, दीप जलाने वाला रूठ गया।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ७०

प्रकृति जैसी शुद्धता
हमारी पहचान
MDH
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Chunky Chat masala
Kitchen King
Chana masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
MDH
मसाले
असली मसाले सच – सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ. सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११८
कार्तिक कृष्ण द्वितीया
विक्रम संवत्
२०७४
दयानन्दाब्द
१९३

October - 2017

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २६

20 वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २७

०४	वेद सुधा
१२	भारत की राष्ट्रभक्त वीरांगनाएँ
१४	प्रेरणा- मानवता की सेवा
१६	हंस चला कौआ की चाल
१८	सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/१७
१९	आर्य नरेश की आर्यनगरी- शाहपुरा
२२	दीपावली और रामकथा
२५	यमी वैवस्वती
२८	स्वास्थ्य- डायबिटीज में फल
२९	कथा सरित- सेवक से आचार्य
३०	सत्यार्थ पीयूष- राज्य की युद्धनीति

स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - ६ | अंक - ०५ | मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६६४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

संसार में सब मनुष्य समान हैं

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः।। - ऋ. ५/६०/५

ऋषिः- श्यावाश्व आत्रेयः।। देवता- मरुतो वाग्निश्च।। छन्दः- निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनय- संसार-भर के सब मनुष्य (मरुत) परस्पर भाई-भाई हैं। मनुष्यमात्र एक ही माता-पिता के पुत्र हैं। संसार के किसी देश के एक कोने में रहने वाले मनुष्य के उसी तरह पिता 'रुद्र'=परमेश्वर है और माता 'पृश्नि' =प्रकृति है, जैसे किसी दूसरे कोने में रहने वाले के। मनुष्य होने की दृष्टि से इनमें न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। काले-गोरे, हब्शी और सभ्य, पूँजीपति और श्रमी, पौर्वात्य और पाश्चात्य, ब्राह्मण और अछूत, हिन्दू और मुसलमान, जापानी या अमेरिकन, अंग्रेज या हिन्दुस्तानी, नागरिक व देहाती, सब-के-सब एक-समान परस्पर मनुष्य-भाई हैं। इनमें ऊँच-नीच मानना अज्ञान है। मनुष्य की दृष्टि से छोटा बड़ा मानना अनुचित है। संसार-भर के मनुष्यों को 'मरुत् देवों' की तरह, उत्तम कल्याण के लिए मिलकर यत्न करना चाहिए, मिलकर संसार में मनुष्यता की उन्नति करनी चाहिए। जब मनुष्य-मनुष्य आपस में घृणा करते हैं, भिन्न-भिन्न

देश के वासी होने से या भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बी होने से लड़ते हैं, एक-दूसरे पर अत्याचार करते हैं, तब वे अपने एक-समान पिता-माता को भूल जाते हैं। क्या अंग्रेज भाइयों को पैदा करनेवाला प्रभु और है और भारतवासियों का और? वह एक ही रुद्र हम सब मरुतों का पिता है। वह कभी बुड्ढा न होनेवाला, कभी न मरनेवाला पिता है। वह हम सबके लिए कल्याण कर्म करने वाला पिता है और हम सबकी माता यह प्रकृति है जो हमारे लिये उत्तम ऐश्वर्यों का दूध प्रदान कर रही है तथा हमें सब सुख पहुँचा रही है। आओ! हम इन सब झूठे भेदभावों को भूलकर-काला-गोरा, पूँजीपति-श्रमी, छूत-अछूत, इस देशवासी और उस देशवासी, इन सब भेदों को भूलकर-हम सब मनुष्य, सब-के-सब मनुष्य, मिलकर मनुष्यमात्र के हित का ध्यान करें; एक-दूसरे के हित का ध्यान करें। अपने शोभन कर्म करनेवाले अमर पिता के आशीर्वाद को पाते हुए और करुणामयी सुखदात्री माता द्वारा अपनी सब कामनाएँ पूरी करते हुए अपनी उन्नति का साधन करें और भाई-भाई की तरह एक-दूसरे की सहायता करते हुए मनुष्यता के उद्देश्य की पूर्ति में बढ़ते जाएँ।

शब्दार्थ- अज्येष्ठासः=जिनमें कोई बड़ा नहीं है और अकनिष्ठासः=जिनमें कोई छोटा नहीं है, ऐसे एते=ये सब, भ्रातरः= परस्पर भाई, सौभगाय सं वावृधुः=उत्तम ऐश्वर्य के लिए मिलकर उन्नति करनेवाले हैं। एषाम्= इन सबका युवा पिता= सदा युवा पिता, स्वपा रुद्रः=कल्याण-कर्म करनेवाला रुद्र परमेश्वर है और मरुद्भ्यः=इन मरुतों-मनुष्यों-के लिए सुदिना=सुख देनेवाली सुदुघा=उत्तम दूध देने वाली माता पृश्निः=प्रकृति है।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
साभार- वैदिक विनय

मरते हुए रिश्तों का सच

१६ वीं शताब्दी के महान् चिन्तक, भारतीय मनीषा के गहन अध्येता, उच्चतम कोटि के दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना अन्य किसी से नहीं। जैसे माता संतानों पर प्रेम,उनका हित करना चाहती है,उतना अन्य कोई नहीं करता। यहाँ 'नहीं करता' में निश्चयात्मक कथन है अर्थात् इसमें संदेह की कोई गुंजाइश ही नहीं है, अतः वे उस संतान को अत्यन्त भाग्यवान मानते हैं जिसके माता-पिता धार्मिक, विद्वान् हों। महर्षि दयानन्द इसी समुल्लास में माता-पिता के प्रमुख कर्तव्य का निरूपण करते हुए लिखते हैं- 'यही माता-पिता का कर्तव्य कर्म, परम धर्म और कीर्ति का काम है जो अपने संतानों को तन, मन और धन से विद्या, धर्म और सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना'। संतानों में अपने कर्तव्य के प्रति अभी से भावनाएँ सुगुम्फित हों अतः वे इसी द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं कि बालक-बालिकाओं को चाहिए कि वे अपने माता, पिता और आचार्य की तन, मन धनादि उत्तम उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करें।

हमने यहाँ इन उच्चादर्शों से युक्त निर्देशों को उद्धृत क्यों किया है? वस्तुतः सत्यार्थ प्रकाश मानव जीवन की आचार संहिता है।

अगर इसमें सन्निहित शिक्षाओं और आदर्शों के अनुसार अपने घर-परिवार और समाज का निर्माण किया जाय तो फिर कोई कारण नहीं है कि आज भी राम और श्रवण कुमार जैसे पुत्र उत्पन्न न हों, भरत जैसे भाई न हों और एक ऐसा समाज निर्मित न हो जहाँ समता, सौहार्द, सामंजस्य, आत्मीयता से परिपूर्ण परिवेश में मनुष्य अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर सके। आज स्थिति विपरीत है। परिवार टूट रहे हैं, रिश्तों में स्वार्थ घर कर गया है। त्याग की वह भित्ति जिस पर मानवता का आलीशान भवन अवस्थित है, आज दरक रही है। वेदमाता कृतघ्नता को सबसे बड़ा पाप बताती है उसी कृतघ्नता ने हमारे हृदयों पर कब्जा कर लिया है। जिन माता-पिता ने हमारे जीवन निर्माण के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया होता है जिसके बिना हमारी कीमत दो कौड़ी की भी नहीं होती, वही आज हमें बोझ लगने लगे हैं। हमें लगता है कि परिवार में माता-पितादि बुजुर्गों का होना हमारे सुख में बाधक है। वे अब अनुत्पादक होने से हमारे किसी काम के नहीं, आज की इस हिसाब-किताब की दुनिया की भाषा में कहें तो वे अब 'एसेट' नहीं हमारे लिए 'लायबिलिटी' हैं, जिसे या तो हम मजबूरी में ढो रहे हैं या जिससे छुटकारा पाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

आपने कभी, जिस जतन से माता-पिता, जी हाँ दुनिया के सभी माता-पिता, अपनी संतान का पालन पोषण करते हैं उनका कैरियर बनाने में अपने को आहूत कर देते हैं, उन प्रयत्नों को अपनी स्मृति में रखने का प्रयास किया है? जी नहीं यह हमारा उत्तर है। पालकों के हृदय की उन भावनाओं और उनसे उपजे प्रयत्नों को उकेरा ही नहीं जा सकता। जो संस्कारित परिवार हैं जिनके बालक-बालिका अपने माता-पिता के प्रति अत्यन्त ममत्व, आत्मीयता और श्रद्धा की भावना रखते हैं वे भी उन प्रयत्नों की गहराइयों को सम्पूर्णता से समेट नहीं सकते हैं।

अतः वर्तमान में किसी माता को अपने शिशु का पालन करते हुए ध्यान से देखिये उसके व्यवहार को, उसकी ममता को विश्लेषित करते जाइए और तब जानिये कि यही सब आपकी माँ ने आपके योग क्षेम के लिए किया होगा तब आपको विश्वास

होगा कि ममता की कोई सीमा नहीं है। ऐसा कोई आग का दरिया नहीं है जिसे माँ अपने शिशु की खातिर पार न कर ले।

हमें लगता है कि वात्सल्य तो प्रभुप्रदत्त है वह तो प्राणीमात्र को सहज प्राप्त है। उसका अतिरेक माँ का पुरुषार्थ है। मनुष्य जाति ही नहीं पशु-पक्षियों की योनियों में भी माँ बनते ही माँ के अन्दर अपनी संतान के लिए वात्सल्य की हिलोरें उठने लगती हैं। मानवेतरों में यह शिशु के सामर्थ्यवान होने पर शिथिल हो जाती है पर मनुष्य जाति में अनन्त है, कभी चुकना तो दूर शिथिल भी नहीं होती। परन्तु संतानों में पालकों के प्रति जो अनुराग है, कर्तव्य भावना है उसका संस्कारों के माध्यम से विकास करना पड़ता है। ऋषियों द्वारा इस हेतु समुचित प्रावधान करना इस बात का प्रमाण है। पितृ-ऋण तथा पितृ-यज्ञ की अवधारणा इसी हेतु से है। श्राद्ध और तर्पण इसके प्रकार हैं। नित्य कांधे पर धारण किये जाने वाले यज्ञोपवीत के तीन धागों के साथ इसको जोड़ा जाकर सदैव धारणकर्त्ता के ध्यान में निरन्तर अपने ऊपर चढ़े हुए ऋणों में इस एक को भी परिगणित करते रहने की योजना भारतीय मनीषा का वह पक्ष है जिसके चलते घर 'घर' बनता है, 'एसेट' और 'लायबिलिटी' की भाषा पितरों के सन्दर्भ में अंकुरित ही नहीं होती, यह पावन दायित्व निभाने का सुअवसर मिले यह संतान की चाहना बन जाती है। पर आज कहाँ यज्ञोपवीत, कहाँ ऋण-बोध। श्राद्ध और तर्पण वर्ष में १५ दिन में सिमट गए (वो भी पितरों के मरने के बाद) तो फादर्स डे तथा मदर्स डे एक दिन में। अतः संतान की गलती से पूर्व हमारी गलती है कि संतान के लिए सब कुछ किया, लुटकर पिटकर उसे डॉक्टर बनाया, इंजीनियर बनाया, कलेक्टर बनया पर संतान में पितरों के प्रति दायित्व बोध का संस्कार नहीं डाला जिसके अभाव में अरबों की संपत्ति उत्पादित करने वाला पिता आज साधारण किराए के मकान में रहने को मजबूर है। और जिसके अभाव में ही वह हृदय विदारक रूह को कंपा देने वाली घटना घटी जिसके कारण बुजुर्गों के प्रति 'अन्तर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस' को ध्यान में रखते हुए यह आलेख लिखा है।

मुम्बई का ओशीवारा इलाका अति संपन्न लोगों के रहने का ठिकाना है। इसी के दसवें माले के दो फ्लैटों में रहने वाली आशा साहनी ने अपने इकलौते बेटे ऋतुराज पर अपनी सारी आशाएँ खर्च कर दीं। ऋतुराज आई.टी, सेक्टर में है और जैसाकि आज चलन हो गया है अच्छे पैकेज के लिए वह अमरीका में सेटल हो गया है। जब तक पति थे आशा साहनी को अकेलापन नहीं खला। बेटे की याद भी आती होगी तो उसकी तरक्की की प्रसन्नता के तले विछोह के दुःख को दबा दिया होगा। २०१३ में पति की मौत के बाद अकेलेपन ने धीरे-धीरे आशा साहनी के बजूद को ग्रसना आरम्भ कर दिया। उसने अप्रैल १६ में अपने बेटे ऋतुराज से फोन पर जो अंतिम बात की थी उसमें उससे यही आग्रह था कि वह वृद्धाश्रम जाना चाहती है।

{चित्र प्रतीकात्मक है}

प्रश्न उठता है कि भव्य फ्लैट और सारे सुख साधनों को त्याग वे वृद्धाश्रम क्यों जाना चाहती थीं, उत्तर एक ही है अकेलेपन की पीड़ा। अकेलेपन का दुःख ऐसा होता है जिसे जिस पर बीतती है वही समझ सकता है। मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि अकेलेपन का अनुभव एक गहन स्तर पर असहनीय अलगाव की भावना से अभिभूत होना भी हो सकता है। यह परित्याग, अस्वीकृति, निराशा, असुरक्षा, चिंता, नैराश्य, निकम्मापन, अर्थहीनता और आक्रोश की भावनाओं में फलीभूत हो सकता है। अगर ये भावनाएँ लंबे समय तक बनी रहें तो वे दुर्बल बना सकती हैं और प्रभावित व्यक्ति को स्वस्थ रिश्ते और जीवन शैली विकसित करने से रोकती हैं। अगर व्यक्ति को विश्वास हो जाए कि वह प्यार के अयोग्य है तो उसकी पीड़ा बढ़ जाती है और वह सामाजिक सम्पर्क से कतराने लगता है। आत्मसम्मान में कमी से अक्सर सामाजिक वियोग उत्पन्न होता है जिससे अकेलापन हो सकता हैं। यहाँ अवसाद कब आपको जकड़ लेता है पता ही नहीं चलता।

आशा जी की कहानी में बेटे की माँ के प्रति दायित्व-निर्वहन की मात्रा शून्य ही थी यह स्पष्ट है। १६ अप्रैल को वह माँ को फोन करता है, बातचीत में मतभेद पैदा होता है और माँ यह कहकर फोन रख देती है कि आइन्दा उसे फोन न करे। इसके बाद आप होते तो क्या करते? अगर ऋतुराज जैसी निष्ठुरता तथा असंवेदनशीलता आपमें नहीं है तो दुनिया का लगभग हर बेटा बार-बार माँ से बात करने का प्रयत्न करता और तब भी बात नहीं होती तो भागकर हिन्दुस्तान आता और अपनी माँ को इस

अवसाद से निकालने का हर संभव प्रयास करता। पर ऋतुराज ने ऐसा नहीं किया। लगभग ६ मास बाद वह ओशीवारा पुलिस स्टेशन में शिकायत अवश्य लिखवाता है कि उसकी माँ की ओर से उसे कोई समाचार नहीं मिल रहा। मिसिंग पर्सन की रिपोर्ट लिखाने व उसकी प्राप्ति की सूचना के बाद वह पुलिस पर भी त्वरित कार्यवाही हेतु दबाब नहीं बनाता। यहाँ तक कि वह दिसम्बर में भारत आता है पर अपनी माँ की खोज-खबर लेने अपने घर नहीं जाता। यह असंवेदनशीलता रूह को कंपा देने वाली है। ऐसे बेटे की माँ जीकर भी क्या करेगी। और यही शायद आशा जी ने किया। अब एक सुसाइड नोट मिलने के बाद पुलिस का भी यह मानना है कि आशा साहनी ने आत्महत्या की थी।

यह तो रही बेटे की बात। अब आती है समाज की बारी क्योंकि आशा के अन्य रिश्तेदारों का हमें कुछ पता नहीं परन्तु न भूलें वह कोई अकेला बंगला नहीं था। एक सोसाइटी में फ्लेट था। माना आशा जी ने अवसाद में सबसे दूरी बनाली थी, वे चिड़चिड़ी और शंकालु हो गयीं थीं परन्तु एक महिला डेढ़ वर्ष से अपने फ्लैट में मरी पड़ी हो और सोसाइटी में रहने वाले लोगों को कुछ पता न हो यह आश्चर्य की बात होने के साथ हमारे समाज का चेहरा भी दिखाती है। हम केवल अपनी आपाधापी में लगे पड़े हैं। परिवार ही नहीं समाज के सरोकार भी दरक रहे हैं। आशा साहनी की मौत के लिए केवल उनका बेटा या उनके पड़ोसी ही नहीं हम सब यानी यह पूरा समाज भी दोषी है। जीवन के अंतिम काल में बोलने को भी तरसने वाले इन बुजुर्गों की तकलीफ को कोई समझना ही नहीं चाहता क्योंकि सब अपने आप में व्यस्त हैं। यह सामाजिक क्षरण की ऐसी घटना है जिस पर समाज शास्त्रियों को गंभीरता पूर्वक सोचना चाहिए। आशा अकेली नहीं थीं जो इस दर्दनाक दौर से गुजर रही थीं।

इस वर्ष जून-जुलाई में एजवेल फाउंडेशन ने देश भर में ५०००० बुजुर्गों से बात की। उनका निष्कर्ष है कि ४३ प्रतिशत बुजुर्ग रिश्तों के विपरीत प्रवाह-जनित अकेलेपन के कारण उत्पन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ग्रस्त हैं। ४५ प्रतिशत बुजुर्गों के बच्चे उनकी इच्छा और आकांक्षाओं पर ध्यान नहीं देते। इस समस्या का स्थायी हल वृद्धाश्रम भी नहीं हैं, वह केवल एक तात्कालिक उपाय है। तभी लखनऊ के जानकीपुरम स्थित शान्ति छवि धाम में पिछले छह सालों से रह रहे सुधीर कुमार (८७ वर्ष), जो एक बड़े अधिकारी थे, फादर्स-डे पर अपना दर्द छिपा न सके। उन्होंने कहा, 'मेरे बच्चों से पूछिए, उन्होंने अपने पिता को क्यों छोड़ दिया। मैं ही केवल अकेला नहीं हूँ, मेरे जैसे यहाँ ७० बुजुर्ग हैं, जो अपने बच्चों के होते हुए आज वृद्धाश्रम में रह रहे हैं।'

तो स्पष्ट है कि वृद्धाश्रम इस समस्या का इलाज नहीं है। भारत जैसे देश में वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ना प्रगति का नहीं अवनति का द्योतक है। अपने बुजुर्ग माँ-बाप को वृद्धाश्रम में भेजना प्राण को देह से अलग करने के समान है। ऐसा विचार तभी आ सकता है जब हम स्वभाव से सरल और तरल न हों। शुष्कता असंवेदनशीलता की निशानी है, जबकि संवेदनशील होना तरलता की। सात्विक गुणों के समावेश के लिए पारिवारिक संस्कारों का होना जरुरी है।

आशा साहनी के केस में सभी इकाईयाँ बुरी तरह फेल हुयी हैं। बेटे की भूमिका तो ऐसी है कि यही कहा जा सकता है कि भगवान किसी को ऐसा बेटा न दे। जाँच एजेंसी पुलिस ने आशा के मोबाइल नंबर पर फोन कर, और निरुत्तर रहने पर यह समझकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली कि आशा जी वृद्धाश्रम में रहने चली गयीं हैं, और तो और आस पड़ोस में रहने वालों और सोसाइटी के अधिकारियों ने भी सहज भाव से यही मान लिया। जैसा हमने कहा कि निर्माणशाला अर्थात् परिवार में संस्कार देने का चलन उपेक्षा का शिकार हो गया अथवा आज के माता-पिता स्वयं उन आदर्शों पर नहीं चल रहे जिनसे संतान प्रेरणा ले सके, अन्यथा ऋषियों के निर्देश को जो परिवार और समाज अपने जीवन और चलन में स्थान दें तो कोई कारण नहीं है कि आशा साहनी जैसी वीभत्स घटनाओं की पुनरावृत्ति हो।

वस्तुतः कमजोर होते परिवार ही समस्या के मूल में हैं। परिवार स्वस्थ संस्कारों के निर्माण स्थल हैं। संस्कारित परिवारों में आज भी वृद्धजनों को धरोहर समझा जाता है न कि बोझ। वे अनुत्पादक कदापि नहीं हैं उनके अनुभव का खजाना किसी भी पीढ़ी की झोली भरने में समर्थ है इसीलिए कहा है-

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

गाँठ बाँध लीजिये कि पितरों के मरने के बाद वर्ष में १५ दिनों में उनका श्राद्ध करना श्राद्ध है ही नहीं, यह अविद्याजन्य मूर्खता

है कि कुछ तथाकथित ब्राह्मणों को इन दिनों में खिला-पिलाकर तृप्त कर देना पितरों को तृप्तिकारक होता है। पितरों का श्राद्ध और तर्पण रोजाना विना अनध्याय के कीजिए। यह दैनिक कर्तव्य है इसीलिए भारतीय मनीषा द्वारा पञ्च महायज्ञों में परिगणित किया गया है।

देखिये महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्राद्ध व तर्पण के सत्यार्थ को प्रकाशित करते हुए क्या लिखते हैं- 'श्राद्ध अर्थात् श्रत् सत्य का नाम है, '**श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्**' जिस क्रिया में सत्य का ग्रहण किया जाय, उसको श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय उसका नाम श्राद्ध है और '**तृप्यन्ति तर्पयन्ति यने पितॄन् तत्तर्पणम्**' जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायँ, उसका नाम तर्पण। परन्तु यह जीवित पितरों के लिए है मृतकों के लिए नहीं।

पितृतर्पण के अन्तर्गत पितरों को तृप्त करने के क्रम में आचार्य दयानद लिखते हैं- उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस-जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहै, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

यह है वैदिक ऋषियों की व्यवस्था। इसका एक एक शब्द जैसे मोती है, इसका मनन जो भी करेगा और जिस परिवार में इसका पालन होगा मजबूरी समझकर नहीं आत्मीयता के साथ होगा, पितरों की सेवा प्रीति की चाशनी में लिपटी होगी, उसमें आशारानी अकेलेपन से लड़ती हुयीं आत्महत्या नहीं करेंगी यह सुनिश्चित है, परन्तु ध्यान रखें यह सतत् प्रक्रिया है। **जैसा व्यवहार हम अपने माता-पितादि के साथ करेंगे वैसा ही हमारी संतानें हमारे साथ करेंगी।**

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

पापकर्म से दूर रहे जो,
करे सदा ही सुन्दर काम।
पाता है आनन्द वही और,
जग में होता उसका नाम॥
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

मेरी उदयपुर की ये पहली विजिट थी। मुझे यहाँ (आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, नवलखा महल) आकर बहुत अच्छा लगा। मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे उस जगह आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जहाँ श्री स्वामी जी ने अपने सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन किया।

- सत्यदेव सोनी

सत्यार्थ प्रकाश वास्तव में जीवन को परिवर्तन करने वाला है। यह आर्ट गैलेरी यहाँ के आगन्तुकों एवं छात्रों के लिये बहुत महत्वपूर्ण मार्गदर्शिका है। आर्यसमाज एवं वेदों, रामायण, महाभारत, मेवाड़ के राजघराने की थोड़ी झलकियाँ बहुत प्रेरणादायक एवं ज्ञान वर्धक हैं।

- अरविन्द सिंह करेलिया, मो.- ६६८२६६८५६५

बचपन से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बारे में सुनते आये थे आज इस स्थान को देखने का मौका मिला। इस पावन भूमि को बारम्बार प्रणाम।

- सत्यवीर सिंह आर्य, अलवर (मो. ६००१३६६८२८)

अमरशहीद कुंवर प्रतापसिंह बारहठ

– राजेन्द्र प्रसाद सिंह डांगी

'मेरी माँ को रोने दो, जिससे किसी अन्य माँ को नहीं रोना पड़े, अपनी माँ को हँसाने के लिए मैं हजारों माताओं को रुलाना नहीं चाहता।' यह उत्तर क्रान्तिकारी कुँवर प्रताप सिंह बारहठ का था, जो उन्होंने सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड को दिया था।

देश की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीद कुंवर प्रतापसिंह का जन्म २४ मई सन् १८९३ को उदयपुर में उस वीर परिवार में हुआ, जिनकी तीन पीढ़ियों ने आजादी की लड़ाई में एक से बढ़कर एक कुर्बानियाँ दीं। वे बारहठ परिवार के गौरव ठाकुर केसरीसिंह के पुत्र थे, जिन्हें देशभक्ति का पाठ माँ के गर्भ में ही पढ़ने को मिल गया था।

अभी वे पूरे वयस्क भी नहीं हुए थे कि उन्हें क्रान्तिकारी दल में कार्य करने के लिए दिल्ली के प्रसिद्ध देशभक्त मास्टर अमीचन्द के पास भेज दिया गया। उन्होंने महान् विप्लवी रासबिहारी बोस से युवा प्रतापसिंह का परिचय करवाते हुए बताया कि इस पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। इस पर भी बोस ने कुछ दिनों तक इन्हें प्रशिक्षण के लिए अपने पास रखा और फिर राजपूताना की सैनिक छावनियों के भारतीय सैनिकों तथा अन्य युवकों को मातृभूमि की रक्षा के लिए स्वतंत्रता संग्राम में सशस्त्र क्रान्ति के लिए तैयार करने हेतु भिजवा दिया।

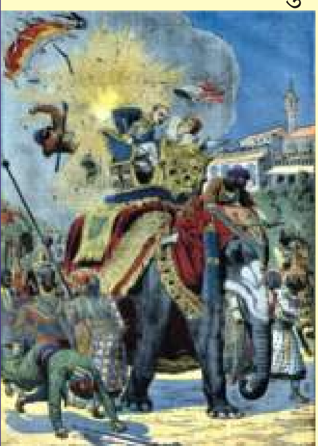

श्री बोस ने जब अंग्रेज वायसराय लार्ड हार्डिंग्स पर बम फेंकने की योजना बनाई तो कुँवर प्रतापसिंह अपने चाचा जोरावरसिंह के साथ थे। क्रान्तिकारी जोरावर सिंह ने दिल्ली के चाँदनी चौक में पंजाब नेशनल बैंक भवन के ऊपर से हाथी पर आ रहे लार्ड हार्डिंग्स पर बुर्के से हाथ निकालकर बम फेंका। इसमें कुँवर प्रताप ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह घटना २३ दिसम्बर सन् १९१२ की थी। जोरावरसिंह तो उसके बाद ताउम्र फरार रहे और अंग्रेजी सरकार के हाथ न आये। किन्तु प्रतापसिंह को गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन प्रमाण के अभाव में छोड़ दिया गया। प्रतापसिंह कोटा आ गए लेकिन कुछ दिनों के बाद परिवार के समस्त पुरुषों के वारन्ट निकले। चाचा, भतीजे ढूँढे जा रहे थे। इसलिए कोटा छोड़कर सिंध हैदराबाद चले गए। वहाँ एक डिस्पेंसरी में कम्पाउण्डर बनकर छद्म रूप में काम करते रहे व शेष समय युवकों में देशभक्ति और क्रान्ति की भावना जाग्रत करते थे। वहाँ से उन्हें निकालकर बीकानेर ले जाने के लिए उनके दल का एक सदस्य रामनारायण चौधरी हैदराबाद पहुँचा। तब प्रताप हैदराबाद के कार्यों को दूसरों के हाथों सौंपकर गर्मी, धूप और ४-५ दिन जागने के बाद रेल से जोधपुर होकर निकले। जोधपुर से आगे एक छोटे से रेलवे स्टेशन आशानाड़ा पर स्टेशन मास्टर उनका परिचित था। वहाँ ठहरकर कुछ आराम कर लेने, कोई नई बात हो तो जान लेने के विचार से प्रताप वहाँ उतर पड़े। उन्हें क्या मालूम था कि वे एक विश्वासघाती के चंगुल में फंसने जा रहे हैं। स्टेशन मास्टर को इस बीच पुलिस ने फोड़ लिया था। स्टेशन मास्टर ने प्रताप को देखते ही कहा-'पुलिस तुम्हारी खोज में चक्कर लगा रही है, कोई देख लेगा, अतः तुम मेरी कोठरी में जा बैठो, कुछ खाओ, पीओ और विश्राम करो।' वह प्रताप को कोठरी में ले गया। प्रताप ने कहा-'निद्रा सता रही है, सोऊँगा।' विश्वासघाती ने कहा निःशंक सो जाओ, मैं बाहर ताला मार देता हूँ, ताकि किसी को शक न हो। गहरी निद्रा में होने पर स्टेशन मास्टर ने कोठरी में से प्रताप के शस्त्र व दूसरी सब चीजें बाहर निकाल लीं, ताकि मुकाबले के लिए प्रताप के हाथ कुछ न रहे। फिर उसने जोधपुर पुलिस को टेलीफोन कर दिया। पुलिस, फौजी दल पूरे बल के साथ आ पहुँचा। आशानाड़ा घेर लिया गया,

कोठरी के द्वार और खिड़कियों पर बर्छें और संगीनें अड़ा दी गईं। चुपके से ताला खोलकर सोते हुए प्रताप पर पुलिस टूट पड़ी और गिरफ्तार कर लिया और बनारस षड्यंत्र केस में उन्हें पाँच वर्ष के कठोर करावास की सजा दे दी गई।

वे बरेली जेल में बन्दी बनाकर रखे गए। भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड बरेली सेन्ट्रल जेल पहुँचे। प्रतापसिंह को ऊँचा पद देने, परिवार की शाहपुरा में जब्त जागीर को वापस कर देने, पिता केसरीसिंह और चाचा जोरावर सिंह को दोषमुक्त कर देने के लालच दिए गए। पर प्रताप पर इनका कोई असर नहीं हुआ। आखिर चार्ल्स ने हृदय को छूता हुआ भारी प्रलोभन दिया, उनकी कोमल भावनाओं को छुआ गया और कहा कि तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए दिन रात रोती है, यदि तुमने सरकार को क्रान्तिकारी दल का भेद नहीं बतलाया तो वह प्राण त्याग देगी। क्लीवलैण्ड नहीं जानता था कि वीर प्रतापसिंह उस गौरवशाली वंश का युवक था जो प्राणों को बचाने के लिए कभी विश्वासघात नहीं करता। प्रतापसिंह ने सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड को जो उत्तर दिया वह उसके महान् उज्ज्वल चरित्र का प्रतीक है। २४ घण्टे तक सोचने का समय देने के बाद सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड वापस आये तो प्रतापसिंह ने तुरन्त उत्तर दिया-

'तुम कहते हो मेरी माता मेरे लिए रात दिन रोती है। मेरी माँ को रोने दो, अपनी माँ को हँसाने के लिए मैं हजारों माताओं को रुलाना नहीं चाहता। यदि मैं अपने साथी क्रान्तिकारियों की माताओं को रुलाने का कारण बना तो वह मेरी मृत्यु होगी और मेरी माँ के लिए घोर कलंक होगा।'

सर चार्ल्स क्लीवलैण्ड ने प्रतापसिंह के बारे में लिखा, मैंने आज तक ऐसा वीर और विलक्षण बुद्धि का युवक नहीं देखा। उसे सताने में कोई कसर नहीं रखी, परन्तु वह धीर-वीर टस से मस नहीं हुआ। गजब का कष्ट सहने वाला था, हमारी सब युक्तियाँ बेकार हुईं, हम सब हार गए, उसी की बात अटल रही, वह विजयी हुआ।

उसके पश्चात् जब अंग्रेज सरकार सब तरह के प्रलोभन देकर हार गई और प्रताप से कुछ भी उगलवाने में असमर्थ रही तो जितने भी दमन चक्र उनके पास थे, प्रताप पर चलाये गये। बैंतों की मार, बिजली के झटके, भोजन में विष आदि सब कुछ आजमाये गये, लेकिन प्रताप पूर्ण मनोबल से उन सारी यातनाओं को सहन करते रहे। २२ वर्षीय युवा प्रताप भीषण अग्नि परीक्षा में भी पूर्ण सफल रहा।

उसके बाद अंग्रेज सरकार ने एक और चाल चली। प्रताप को बरेली जेल से रेल में बिठाकर बिहार के हजारीबाग जेल में लाया गया, वहाँ दिल्ली षड्यंत्र और कोटा षड्यंत्र में फंसाये गये उनके पिता ठाकुर केसरीसिंह को कैदी वेश में प्रताप के दर्शन कराए गए। देखते ही प्रताप की आँखें श्रद्धा से झुक

गईं और पितृ चरणों में झुककर उसने प्रणाम किया। पुलिस अधिकारियों ने काराबद्ध केसरीसिंह से कहा- 'ठाकुर साहब, प्रताप को आपसे मिलाने के लिए लाये हैं। उससे आप कह दीजिए कि वह सच्ची बात बतला दे, प्रताप और आप तुरन्त छोड़ दिए जायेंगे।' प्रताप की ओर कटु दृष्टि से देखते हुए कठोर स्वर में पिता ने कहा- 'प्रताप तुम अपने कर्तव्य से विमुख होकर उद्देश्य से फिर सकते हो, साथियों के साथ विश्वासघात कर भण्डाफोड़ कर सकते हो और कैद से छूट सकते हो, लेकिन याद रखना अपने पिता की गोली का निशाना नहीं चुका सकोगे। यदि तुम विचलित होकर फूट गए तो केसरीसिंह की गोली तुम्हारे सीने में होगी। यहाँ से छूटते ही सबसे पहले मैं तुम्हें जान से मारूँगा।

प्रताप ने कहा- 'दाता मैं आपका पुत्र हूँ, मुझसे स्वप्न में भी देशद्रोह नहीं होगा। ये लोग नाहक ही मुझे यहाँ घसीट लाये थे।' यह था पिता और पुत्र का अंतिम मिलन।

बनारस षड्यंत्र में जब प्रताप पुलिस हिरासत में थे तो पुलिस के उच्चाधिकारियों द्वारा उसे कैसे कैसे प्रलोभन दिए गए, इसका विवरण शचीन्द्रनाथ सान्याल ने 'बन्दी जीवन' में विस्तार से दिया है।

प्रताप को पाँच वर्ष की सजा हुई और उसे बरेली सेन्ट्रल जेल में काल कोठरी में रखा गया। मुख्य अभियुक्त रासबिहारी बोस भारत छोड़कर जापान चले गए थे। शचीन्द्रनाथ सान्याल को आजन्म कालापानी (अण्डमान) की सजा हुई। जोरावरसिंह आजन्म फरार हो गए। क्रान्तिकारी प्रताप भी नारकीय यातनाओं को झेलते-झेलते अमर शहीद बन गए। प्रताप को बरेली जेल में बिना मौत मार डाला गया। विक्रमी

संवत् १६७५ की बैसाखी पूर्णिमा दिनांक २४ मई १६१८ को वे २५ वर्ष की समाप्ति पर सदा के लिए गुलामी के बंधन तोड़कर चले गए। बंदिनी माँ के पीत कपोलों पर उस दिन तप्त आँसू ढुलक रहे थे। बरेली के लोगों को इसका किसी प्रकार पता लग गया और उन्होंने लाश का अंतिम संस्कार करने के लिए माँग की। लेकिन सरकार ने लाश देने से मना कर दिया। यदि हिन्दू रीति से प्रताप की लाश का जेल में ही अंतिम संस्कार किया जाता तो जेल में उठते हुए धुएँ को देखकर स्थानीय लोगों में सरकार के विरुद्ध आक्रोश फूटकर बलवा होने की आशंका थी। अतः जेल अधिकारियों ने प्रताप की लाश को हिन्दू होते हुए भी जेल परिसर में खड्डा खोदकर कब्र में दफना दिया। इस प्रकार देश की स्वतंत्रता के लिए सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के बाद राजपूताना की यह प्रथम आहुति थी और वह भी ऐसी कि विधाता उस मिट्टी का पात्र कभी-कभी ही अपने हाथों से घड़ता है। क्या आश्चर्य कि राव गोपालसिंह खरवा जैसे क्रान्तिकारी के मन में प्रताप के लिए ऐसी ही भावना हो सकी कि 'विधाता ने सौ रंघड़ (वीर क्षत्रिय) भांग कर प्रताप को बनाया था।' धन्य हो वीर। तुम जैसे वीर पुत्रों के बलिदान से ही भारत माता स्वतंत्र हुई। ऐसे देशभक्त वीर प्रतापसिंह बारहठ पर किसे गर्व न होगा?

ऐसे अनूठे और आजादी के दीवानों का स्मारक बनाने को कुछ शाहपुरावासियों ने संकल्प लिया और 'श्री केसरीसिंह बारहठ स्मारक समिति' की स्थापना हुई। दिनांक २१ नवम्बर १६७२ को त्रिमूर्ति (केसरी सिंह बारहठ, जोरावर सिंह, प्रतापसिंह बारहठ) स्मारक बनाने हेतु शिलान्यास हुआ और २५ अप्रैल १६७६ को त्रिमूर्ति का अनावरण हुआ, जो आज भी शाहपुरा के कुण्डगेट के बाहर गर्व से झाँकती हुई दर्शन देती है। समिति के प्रयास से स्थानीय महाविद्यालय का नाम प्रताप के नाम पर 'श्री प्रताप सिंह बारहठ राजकीय महाविद्यालय' तथा स्थानीय बालिका विद्यालय का नाम प्रताप के नाम पर प्रताप की वीर जननी माणिक कँवर के नाम पर 'वीर माता माणिक कँवर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय' रखा गया। अमर शहीद बारहठजी की हवेली में स्वतंत्रता सैनानियों का संग्रहालय बनाया जा रहा है। त्रिमूर्ति स्मारक पर प्रतिवर्ष २३ दिसम्बर को 'शहीद मेला' लगता है।

- श्री केसरीसिंह बारहठ स्मारक समिति
शाहपुरा, जिला भीलवाड़ा (राज.)

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

भारत की राष्ट्रभक्त वीरांगनाएँ

संवत् १३६८ (ई.सन् १३११) मंगलवार बैसाख सुदी ५ को विका दहिया जालौर दुर्ग के गुप्त भेद अलाउद्दीन खिलजी को बताने के पारितोषिक स्वरूप मिली धन की गठरी लेकर बड़ी खुशी खुशी घर लौट रहा था। शायद उसके हाथ में इतना धन पहली बार ही आया होगा। चलते चलते रास्ते में सोच रहा था कि इतना धन देखकर उसकी पत्नी हीरादे बहुत खुश होगी। इस धन से वह बड़े चाव से गहने बनवायेगी। और वह भी युद्ध समाप्ति के बाद इस धन से एक आलीशान हवेली बनाकर आराम से रहेगा। हवेली के आगे घोड़े बंधे होंगे, नौकर चाकर होंगे। अलाउद्दीन द्वारा जालौर किले में तैनात सूबेदार के दरबार में उसकी बड़ी हैसियत समझी जायेगी ऐसी कल्पनाएँ करता हुआ वह घर पहुँचा और धन की गठरी कुटिल मुस्कान बिखेरते हुए अपनी पत्नी हीरादे को सौंपने हेतु बढ़ाई।

अपने पति के हाथों में इतना धन व पति के चेहरे व हावभाव को देखते ही हीरादे को अलाउद्दीन खिलजी की जालौर युद्ध से निराश होकर दिल्ली लौटती फौज का अचानक जालौर की तरफ वापस कूच करने का राज समझ आ गया। और समझती भी क्यों नहीं आखिर वह भी एक क्षत्रिय नारी थी। वह समझ गयी कि उसके पति विका दहिया ने जालौर दुर्ग के असुरक्षित हिस्से का राज अलाउद्दीन की फौज को बताकर अपने वतन जालौर व अपने पालक राजा कान्हड़ देव सोनगरा चौहान के साथ गद्दारी कर यह धन पारितोषिक स्वरूप प्राप्त किया है।

उसने तुरन्त अपने पति से पुछा- 'क्या यह धन आपको अलाउद्दीन की सेना को जालौर किले का कोई गुप्त भेद देने के बदले मिला है?' विका ने अपने मुँह पर कुटिल मुस्कान बिखेर कर व खुशी से अपनी मुंडी ऊपर नीचे कर हीरादे के आगे स्वीकारोक्ति कर जबाब दे दिया ।

यह समझते ही कि उसके पति विका ने अपनी मातृभूमि के साथ गद्दारी की है, अपने उस राजा के साथ विश्वासघात किया है जिसने आजतक इसका पोषण किया था, हीरादे आग बबूला हो उठी और क्रोध से भरकर अपने पति को धिक्कारते हुए दहाड़ उठी-'अरे! गद्दार आज विपदा के समय दुश्मन को किले की गुप्त जानकारी देकर अपने वतन के साथ गद्दारी करते हुए तुझे शर्म नहीं आई? क्या तुम्हें ऐसा करने के लिए ही तुम्हारी माँ ने जन्म दिया था?अपनी माँ का दूध लजाते हुए तुझे जरा सी भी शर्म नहीं आई? क्या तुम एक क्षत्रिय होने के बावजूद क्षत्रिय द्वारा निभाये जाने वाले स्वामिभक्ति-धर्म के बारे में भूल गए थे?'

विका दहिया ने हीरादे को समझा कर शांत करने की कोशिश की पर हीरादे जैसी देशभक्त क्षत्रिय नारी उसके बहकावे में कैसे आ सकती थी? पति पत्नी के बीच इसी बात पर बहस बढ़ गयी। विका दहिया की हीरादे को समझाने की हर कोशिश ने

{चित्र प्रतीकात्मक है}

उसके क्रोध को और ज्यादा भड़काने का ही कार्य किया।

हीरादे पति की इस गद्दारी से बहुत दुखी व क्रोधित हुई। उसे अपने आपको ऐसे गद्दार पति की पत्नी मानते हुए शर्म महसूस होने लगी। उसने मन में सोचा कि युद्ध के बाद उसे एक गद्दार व देशद्रोही की बीबी होने के ताने सुनने पड़ेंगे और उस जैसी देशभक्त ऐसे गद्दार के साथ रह भी कैसे सकती है। इन्हीं

विचारों के साथ किले की सुरक्षा की गोपनीयता दुश्मन को पता चलने के बाद युद्ध के होने वाले संभावित परिणाम और जालौर दुर्ग में युद्ध से पहले होने वाले जौहर के दृश्य उसके मन मस्तिष्क में चलचित्र की भाँति चलने लगे। जालौर दुर्ग की राणियों व अन्य महिलाओं द्वारा युद्ध में हारने की आशंका के चलते अपने सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर की धधकती ज्वाला में कूदने के दृश्य और छोटे छोटे बच्चों के रोने विलापने के दृश्य, उन दृश्यों में योद्धाओं के चहरे के भाव जिनकी अर्धांगनियाँ उनकी आँखों के सामने जौहर चिता पर चढ़ अपने आपको पवित्र अग्नि के हवाले करने वाली थीं स्पष्ट दिख रहे थे। साथ ही दिख रहा था जालौर के रणबांकुरों द्वारा किया जाने वाले शाके का दृश्य जिसमें जालौर के रणबांकुरे दुश्मन से अपने रक्त के आखिरी कतरे तक लोहा लेते लेते कट मरते हुए मातृभूमि की रक्षार्थ शहीद हो रहे थे। एक तरफ उसे जालौर के राष्ट्रभक्त वीर स्वातंत्र्य की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति देकर स्वर्ग गमन करते नजर आ रहे थे तो दूसरी और उसकी आँखों के आगे उसका राष्ट्रद्रोही पति खड़ा था।

ऐसे दृश्यों के मन में आते ही हीरादे विचलित व व्यथित हो गई थी। उन वीभत्स दृश्यों के पीछे सिर्फ उसे अपने पति की गद्दारी नजर आ रही थी। उसकी नजर में सिर्फ और सिर्फ उसका पति ही इनका जिम्मेदार था।

हीरादे की नजर में पति द्वारा किया गया यह एक ऐसा जघन्य अपराध था जिसका दंड उसी वक्त देना आवश्यक था। उसने मन ही मन अपने गद्दार पति को इस गद्दारी का दंड देने का निश्चय किया। उसके सामने एक तरफ उसका सुहाग था तो दूसरी तरफ देश के साथ अपनी मातृभूमि के साथ गद्दारी करने वाला गद्दार पति। उसे एक तरफ देश के गद्दार को मारकर उसे सजा देने का कर्तव्य था तो दूसरी ओर उसका अपना उजड़ता सुहाग। आखिर उस देशभक्त वीरांगना ने तय किया कि -'अपनी मातृभूमि की सुरक्षा के लिए यदि उसका सुहाग खतरा बना है और उसके पति ने देश के प्रति विश्वासघात किया है तो ऐसे अपराध व दरिंदगी के लिए उसकी भी हत्या कर देनी चाहिए। गद्दारों के लिए यही एक मात्र सजा है।'

मन में उठते ऐसे अनेक विचारों ने हीरादे के रोष को और भड़का दिया उसका शरीर क्रोध के मारे कांप रहा था उसके हाथ देशद्रोही को सजा देने के लिए तड़फ रहे थे। हीरादे ने आव देखा न ताव पास ही रखी तलवार उठा अपने गद्दार और देशद्रोही पति का सिर एक झटके में काट डाला। हीरादे के एक ही वार से विका दहिया का सिर कट कर ऐसे लुढ़क गया जैसे किसी रेत के टीले पर तुम्बे की बेल पर लगा तुम्बा ऊँट की ठोकर खाकर लुढक जाता है। एक हाथ में नंगी तलवार व दूसरे हाथ में अपने गद्दार पति का कटा मस्तक लेकर उसने अपने राजा कान्हड़ देव को उसके एक सैनिक द्वारपाल द्वारा गद्दारी किये जाने व उसे उचित सजा दिए जाने की जानकारी दी।

कान्हड़ देव ने इस राष्ट्रभक्त वीरांगना को नमन किया। और हीरादे जैसी वीरांगनाओं पर मन ही मन गर्व करते हुए कान्हड़ देव अलाउद्दीन की सेना से निर्णायक युद्द करने के लिए चल पड़े।

किसी कवि ने हीरादे द्वारा पति की करतूत का पता चलने की घटना के समय हीरादे के मुँह से अनायास ही निकले शब्दों का इस तरह वर्णन किया है-

'हिरादेवी भणइ चण्डाल सूं मुख देखाड्यूं काळ'

अर्थात्- विधाता आज कैसा दिन दिखाया है कि- 'इस चण्डाल का मुँह देखना पड़ा।' यहाँ हीरादेवी ने चण्डाल शब्द का प्रयोग अपने पति विका दहिया के लिए किया है।

इस तरह एक देशभक्त वीरांगना अपने पति को भी देशद्रोह व अपनी मातृभूमि के साथ गद्दारी करने पर दंड देने से नहीं चूकी।

देशभक्ति के ऐसे उदाहरण विरले ही मिलते हैं जब एक पत्नी ने अपने पति को देशद्रोह के लिए मौत के घाट उतार कर अपना सुहाग उजाड़ा हो। पर अफसोस हीरादे के इतने बड़े त्याग व बलिदान को इतिहास में वो जगह नहीं मिली जिसकी वह हकदार थी। हीरादे ही क्यों जैसलमेर की माहेची व बलुन्दा ठिकाने की रानी बाघेली के बलिदान को भी इतिहासकारों ने जगह नहीं दी जबकि इन वीरांगनाओं का बलिदान व त्याग भी पन्नाधाय के बलिदान से कम ना था। देश के ही क्या दुनियां के इतिहास में राष्ट्रभक्ति का ऐसा अतुलनीय अनूठा उदाहरण कहीं नहीं मिल सकता।

काश आज हमारे देश के बड़े अधिकारियों,नेताओं व मंत्रियों की पत्नियाँ भी हीरादे जैसी देशभक्त नारी से सीख ले अपने भ्रष्ट पतियों का भले सिर कलम ना करें पर उन्हें धिक्कार कर बुरे कर्मों से रोक तो सकती ही हैं!!

नोट - कुछ इतिहासकारों ने हीरादे द्वारा अपने पति की हत्या तलवार द्वारा न कर जहर देकर करने का जिक्र भी किया है। बेशक हीरादे ने कोई भी तरीका अपनाया हो पर उसने अपने देशद्रोही पति को मौत के घाट उतार कर सजा जरुर दी।

साभार- ज्ञान दर्पण

पूरा परिवार मानवता की सेवा में

डॉ. रविन्द्र कोल्हे और डॉ. स्मिता कोल्हे ने मेलघाट के वासियों की जिन्दगी बदल दी है। उन्होंने उस इलाके की स्वास्थ्य सुविधाओं को एक नया आयाम दिया है और लोगों को बिजली, सड़क और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र उपलब्ध कराये हैं। आईये जानें उनके इस अद्भुत सफर की कहानी।

डॉक्टरी करके प्रायः लोग सुनहरी जिन्दगी के सपने देखते हैं, पर रेल्वे कर्मचारी देवराव कोल्हे के पुत्र डॉ. रविन्द्र कोल्हे महात्मा गाँधी और विनोबा भावे की किताबों से बहुत प्रभावित थे। जब तक उन्होंने अपनी पढ़ाई खत्म की, उन्होंने निश्चय कर लिया था कि वो अपने हुनर का इस्तेमाल पैसों के लिए नहीं बल्कि जरुरतमन्दों की मदद के लिए करेंगे। उनके आगे सिर्फ यही सवाल था कि शुरुआत कहाँ से की जाये?

पर जल्दी ही उन्हें जवाब मिल गया, जब उन्होंने डेविड वर्नर की पुस्तक का शीर्षक देखा 'Where There is No Doctor' (जहाँ कोई डॉक्टर नहीं है)। इस किताब के प्रथम पृष्ठ पर ४ लोगों की तस्वीर थी जो एक मरीज को अपने कंधे पर उठाये चले जा रहे थे, और उस तस्वीर के नीचे लिखा था- Hospital 30 miles away (अस्पताल तीस किलोमीटर की दूरी पर है)।

डॉ. कोल्हे ने अपने कार्यक्षेत्र के रूप में बैरागढ को चुना, जो महाराष्ट्र के मेलघाट में स्थित है। बैरागढ पहुँचने के लिए ४० किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था।

परन्तु समस्याएँ कम नहीं थी। डॉ. कोल्हे बताते हैं- 'एक आदमी का एक हाथ विस्फोट में उड़ गया था। हादसे के १३ दिन बाद वो मेरे पास इलाज के लिए आया। मैं सर्जन नहीं था इसलिए मैं उसकी मदद नहीं कर सका। तब मुझे लगा कि ऐसे मरीजों को बचाने के लिए मुझे और पढ़ने की जरुरत है, डॉ. कोल्हे १९८७ में MD करने चल दिए। उन्होंने अपनी थीसिस मेलघाट में व्याप्त कुपोषण पर की। उनकी थीसिस ने लोगों का ध्यान इस समस्या की तरफ खींचा, बी बी सी ने इस खबर का प्रचार किया।

डॉ. कोल्हे अब मेलघाट लौटना चाहते थे, पर इस बार अकेले नहीं। वो एक सच्चा साथी चाहते थे। उन्होंने अपने लिए लड़की ढूँढना शुरू किया पर उनकी चार शर्तें थीं। **पहली**- लड़की पैदल ४० किलोमीटर चलने को तैयार हो (जितनी दूरी बैरागढ़ जाने के लिए तय करनी होती थी)। **दूसरी**- वो ४ रुपये वाली शादी को तैयार हो (उन दिनों कोर्ट मैरिज ४ रुपये में होती थी)। **तीसरी**- वो ४०० रुपये में पूरे महीने गुजारा कर सके (डॉ. कोल्हे हर मरीज से एक रुपया लेते थे और हर महीने ४०० मरीज देखते थे)। और आखिरी शर्त ये थी कि अपने लिए तो नहीं पर कभी दूसरों के भले के लिए भीख भी माँगना पड़े तो वो उसके लिए तैयार हो। करीब १०० लड़कियों द्वारा ठुकराए जाने के बाद आखिरकार डॉ. स्मिता, जो नागपुर में एक जानी मानी डॉक्टर थीं, ने डॉ. कोल्हे का प्रस्ताव सभी शर्तों के साथ स्वीकार कर लिया। और इस तरह १९८९ में मेलघाट को उसका दूसरा डॉक्टर मिल गया ।

डॉ. स्मिता जब पहली बार माँ बनने वाली थीं तब डॉ. कोल्हे ने निश्चय किया था कि वो उनका प्रसव खुद करेंगे जैसा कि वो गाँव वालों का करते थे। पर किसी कारणवश बच्चे को मैनिंजाइटिस, निमोनिया और सेप्टिसीमिया हो गया। लोगों ने सुझाव दिया कि माँ और बच्चे को अकोला के बड़े अस्पताल में ले जाया जाये। डॉ. कोल्हे ने निर्णय डॉ. स्मिता पर छोड़ दिया। डॉ. स्मिता ने फैसला किया कि वो अपने बच्चे का

इलाज गाँव के बाकी बच्चों की तरह कराएँगी। इसके बाद गाँव वालों की नजर में उनकी इज्जत और बढ़ गयी।

डॉ. कोल्हे के अनुसार मेलघाट की वास्तविक समस्या गरीबी थी। वो निमोनिया से मरते थे क्यूँकि जाड़ों में उनके पास खुद को ढकने को कपड़े नहीं होते थे। वो कुपोषण से मरते थे क्यूँकि उनके पास कोई काम नहीं था और जब खेती का मौसम नहीं होता था तब उनके पास पैसे भी नहीं होते थे। हम मौत की इन जड़ों का इलाज करना चाहते थे- डॉ. रविन्द्र कोल्हे कहते हैं। जब डॉ. रविन्द्र और डॉ. स्मिता ने गाँव वालों का स्वास्थ्य सुधार दिया तो इन भोले गाँव वालों को उनमें भगवान नजर आने लगा। उन्हें लगा कि इन डॉक्टरों के पास हर चीज का इलाज है। अब वो लोग उनके पास अपने बीमार पेड़ पौधे और मवेशियों को भी इलाज के लिए लाने लगे।

चूँकि वहाँ कोई दूसरा डॉक्टर नहीं था, डॉ. कोल्हे ने अपने एक पशु चिकित्सक मित्र से जानवरों की शारीरिक संरचना के बारे में पढ़ा और पंजाब राव कृषि विद्यापीठ अकोला से कृषि की पढ़ाई की। काफी मेहनत के बाद उन्होंने एक ऐसा बीज बनाया जिस पर फंगस नहीं लगता था। पर कोई इसे पहली बार इस्तेमाल नहीं करना चाहता था, इसलिए डॉ. कोल्हे और उनकी पत्नी ने खुद ही खेती करना शुरू कर दिया। इस डॉक्टर दम्पति ने जागरूकता शिविरों का आयोजन करना शुरू किया जिससे खेती की नयी तकनीकों

डॉ. कोल्हे का घर

के बारे में लोग जागरूक हों, पर्यावरण की रक्षा हो और सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं का लाभ उठा सकें। लोगों को कृषि की तरफ प्रेरित करने हेतु डॉ. कोल्हे का बड़ा बेटा किसान बन गया।

'हमने लाभ आधारित खेती शुरू की। हमने सोयाबीन की खेती शुरू की जो महाराष्ट्र में कहीं नहीं होती थी। इसके अलावा हमने किसानों को मिश्रित खेती करने के लिए प्रेरित किया और उन चीजों को उगाया जो उनकी मूलभूत जरुरत थीं। आज मैं अपनी किसानी से इतने पैसे कमा रहा हूँ जितना एक आई आईटियन किसी प्राइवेट कम्पनी से कमाता है', रोहित कोल्हे कहते हैं। इस दम्पति ने पीडीएस (सार्वजनिक वितरण प्रणाली) को भी अपने हाथ में लिया ताकि बारिश के वक्त भी हर किसी को भोजन मिल सके। इस वजह से मेलघाट में कई सालों से अब कोई किसान आत्महत्या नहीं करता। 'अगर हम किसी को एक दिन का खाना देते हैं तो उसकी बस एक ही दिन की भूख मिटती है, पर अगर हम उसे कमाना सिखाते हैं तो हम उसे जिन्दगी भर का खाना दे देते हैं, और हम यही करना चाहते थे।' कोल्हे दम्पति कहते हैं। एक बार पी.डब्लू.डी मिनिस्टर, नितिन गडकरी, जो स्मिता के मानस भाई थे कोल्हे दम्पति से मिलने उनके घर आये और उनके रहने का ढंग देख कर चौक गए। उन्होंने उनके लिए घर बनाने की इच्छा जाहिर की। स्मिता ने घर के बजाय अच्छी सड़कें बनाने को कहा और मंत्रीजी ने अपना वादा निभाया। आज मेलघाट के ७०

गाँवो में सड़कें बन चुकी हैं। मेलघाट महाराष्ट्र के सबसे पिछड़े हिस्सों में से एक है। यहाँ तकरीबन ३०० गाँव हैं और करीब ३५० गैर सरकारी संस्थाएँ काम कर रही हैं। पर वो सिर्फ कुछ चीजें मुफ्त में बाँटने का काम करती हैं जब कि डॉ. कोल्हे और डॉ. स्मिता इन लोगों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं।

इस डॉक्टर दम्पति की लम्बी लड़ाई ने अब अपना फल दिखा दिया है और अब मेलघाट में अच्छी सड़कें हैं, बिजली है और १२ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैं। डॉ. कोल्हे अब किसी से पैसे नहीं लेते। वो लोगों को सरकारी अस्पताल ले जाकर यथासंभव बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ दिलाते हैं। इस गाँव में अभी तक कोई सर्जन नहीं है इसलिए डॉ. कोल्हे के छोटे बेटे, राम जो अकोला के सरकारी मेडिकल कॉलेज से MBBS कर रहे हैं, सर्जन बनने की इच्छा रखते है। यह परिवार अभी तक मेलघाट के लोगों को एक बेहतर जिन्दगी देने के लिए संघर्ष कर रहा है। उनका अगला मिशन मेलघाट के सभी छोटे-छोटे गाँवों में बिजली उपलब्ध कराना है।

आज के युग में जहाँ डॉक्टरी सिर्फ एक पेशा बन कर रह गयी है, इन दो डॉक्टरों का आचरण किसी भगवान से कम नहीं है।

मानवी कटोच

साभार- वैटर इण्डिया

हंस चला कौआ की चाल

लेखक! आपको कहावत भी पता नहीं, कहावत है- कौआ चला हंस की चाल। आपने कौआ के स्थान पर हंस, और हंस के स्थान पर कौआ लिखकर कहावत को उल्टा-पुल्टा कर दिया है। आपका आक्षेप ठीक ही है। कहावत तो आपने जो बतायी है, वही है, पर लेखक ने भूलवश नहीं समझ बूझकर कौआ के स्थान पर हंस और हंस के स्थान पर कौआ को इसलिये रख दिया है, क्योंकि कौआ ने तो अपनी चाल नहीं बदली है, पर मनुज-हंस ने अपनी चाल को बदल दिया है। देखने में तो वह ऊपर से हंस लगता है, किन्तु उसका व्यवहार बिल्कुल कौआ समान हो गया है। अब देखिये न विश्व के तथाकथित सब धर्म सम्प्रदाय देखते ही रह गये, संसार के सभ्य कहे जाने वाले देश आयरलैण्ड, अमेरिका आदि में समलैंगिक सम्बन्धों को खुलेआम वैधानिक मान्यता प्रदान कर दी। जबकि भारत जैसे समस्त देशों में अब भी इसे घृणास्पद समझा जाता है। अलीगढ़ महानगर ने तो एक उदाहरण भी प्रस्तुत कर दिया है, यहाँ के अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मराठी भाषा विभागाध्यक्ष प्रोफेसर, कॉलोनी में ऐसा अप्राकृतिक दुष्कृत्य करते पकड़ लिए गये, तो उन्हें कालोनी से निकलना पड़ा, पद से हटना पड़ा और न्यायालय के निर्णय आने से पूर्व ही मरण का वरण करके इस भूमि के भार को ही हल्का करना पड़ गया।

सहज ही एक प्रश्न उठता है कि कोई भी विधायिका या न्यायपालिका क्या नैसर्गिक न्याय के विरुद्ध ऐसा निर्णय कर सकती है। मनुष्यों के अतिरिक्त क्या पशुओं पर भी वह ऐसी विधिक प्रक्रिया प्रारम्भ कर सकती है। जो मनुष्य पैरों के बल चलते हैं, उन्हें क्या किसी कानून के द्वारा, सिर के बल चलने पर बाध्य किया जा सकता है? सामान्य मानव के साथ तो ऐसा हो नहीं सकता है, किन्तु जो अपनी विधायी सभाओं में ऐसे अनैतिक निर्णय पारित करते हैं, उनके सिर ईश्वर पुनर्जन्म में अवश्य ऊपर से नीचे कर सकता है। कोई भी उनसे मिल सकता है, सामने खड़े हुए बड़े-बड़े वृक्ष पुकार-पुकार कर कह उठेंगे, हम हैं प्रभु-प्रकृति के विपरीत बुद्धि रखने वाले तथाकथित सभ्य प्राणी। अब तो उन्हें अपनी हरीतिमा-सुगन्धि बिखेरकर पर्यावरण-शोधन की आज्ञा निभानी है। वे निश्चिन्त भी हैं क्योंकि उन्हें वर्तमान जीवन के आगे पुनर्जन्म का पता नहीं है।

नीतिकार ने ठीक ही लिखा है कि आहार-निद्रा, भय एवं मैथुन हर प्राणी की आवश्यकता है, यदि कोई यहाँ तक ही सीमित रहता है तो वह मनुष्य होते हुये भी पशु ही है, और यदि वह धर्म के आचरण को अपने साथ जोड़ लेता है, तो यही उसकी विशेषता मननशील मनुष्य को उच्चतर पद प्रदान करती है। सभी को ज्ञात है कि ईश्वर ने मनुष्य को कर्म करने की स्वतन्त्रता प्रदान की है, किन्तु उसका पूर्ण फल

भोगने का अधिकार उसके हाथ में नहीं है, उसको तो परमात्मा के विधि-विधान के अनुसार ही उसे भोगना पड़ेगा। आहार की याचना हो या काम की वासना हो, पशु को पूर्व निर्धारित विधि पर ही निर्भर रहना पड़ेगा। शाकाहारी-मांसाहारी नहीं हो सकता, मांसाहारी-शाकाहारी नहीं हो सकता। इसी प्रकार काम-वासना के प्रति पशुओं की ऋतुकाल एवं योनि-अंग की निर्भरता को भंग नहीं किया जा सकता। परन्तु मनुष्य को मननशीलता की विद्युत तरंगे प्रदान कर परमात्मा ने धरती पर भेजा है और यदि वह इस मननशीलता की विद्युत धारा से कट जाता है तो वह मननहीनता के अन्धकार में जकड़ जाता है। परिणामतः वह

अधम से अधम स्थिति में पहुँचने को विवश होता है।

यही मननशीलता उसे हंस बनाती है जो नीर-क्षीर के विवेचन में समर्थ होता है, जो आत्मा की शुद्धता को सुनिश्चित करता है, और जो नभमण्डल के सूर्य से प्राप्त ज्ञानप्रकाश की बुद्धिमत्ता से भूमण्डल का सूर्य बनता है। मननशीलता की यह विद्युत हटते ही आकार-प्रकार में मनुष्य के स्वरूप में दिखाई देने वाला वही हंस-वंश मनुष्य मननहीनता से ग्रसित होकर कौआ बन जाता है। जिसके विषय में युगों से प्रचलित कहावत 'स्याना कौआ 'गू' खाये' चरितार्थ हो उठती है, जो खीर खाने के बाद भी दिखाई देने वाले 'गू' में अपनी चोंच डालने से बाज नहीं आता। समलैंगिक लोग भी 'गे' कहलाते हैं। चोर गठरी को सरपर रखकर भाग रहा था, मार्ग में मिला एक सिपाही, उसने चोर को डांटते हुए कहा गठरी में चुराकर क्या ले जा रहा है?चोर ने उत्तर दिया- 'गेहूँ'। अच्छा तो कोई बात नहीं जाओं मैं भी

'गे' हूँ। दुष्कर्मी परस्पर एक दूसरे का ऐसे ही समर्थन करते हैं। गठरी में गेहूँ का अनाज था, सिपाही उसे अपना साथी 'गे' समझ बैठा।

इसीलिए वेद भगवान हमें सावधान करते हुए अपने पूर्वजों की शरण में रहकर आदर्श जीवन की प्रेरणा प्रदान करते हैं। देखिये मंत्र (अथर्व १८.२.२६)

यत्ते अङ्गमतिहितं पराचैरपानः प्राणो य उ वा ते परेतः।
तत्ते संगत्य पितरः सनीडा घासाद् घासं पुनरा वेशयन्तु॥

भावार्थ- हे मनुष्य जो तेरा शारीरिक एवं आत्मिक अंग उल्टा होकर अपनी मर्यादा को छोड़ बैठा है, अथवा तेरा जो अपान या प्राण विचलित होकर विपरीत गामी हो गया है। नीड तुल्य घर में रहने वाले पितर वृन्द अपनी संगति से तेरी इस हानि या दुर्दशा को फिर से वैसे ही ठीक कर दें जैसे बढ़ी हुई अव्यवस्थित घास को उसी घास का लपेटा लगाकर बाँध दिया जाता है तो वह शृंखलाबद्ध होकर सुड़ौल हो जाती है। घास के बंध जाने से कई परिष्कारात्मक लाभ मिल जाते हैं। भूमि-वायु, वर्षा जल तथा सूर्य रश्मियों का सरलता से अवशोषण करते हुए अपनी उर्वरता को बनाये रखती है और क्षतिकारी कृमियों से बचती है। साथ ही यह घास भी मानव-पशु के लिए उपयोगी बनी रहती है। मन्त्र में वर्णित घास कुछ और मार्गदर्शन भी प्रदान करती है। जैसे मनुष्य के सिर में अनगिनत बाल उगते हैं जो मनुष्य के मन में उगने वाले असंख्य विचारों के समान हैं, उन्हें चूड़ाकर्म-मुण्डन संस्कार द्वारा सुविचारवान बनाया जाता है। साथ ही नर-नारी के व्यक्तित्व में सौन्दर्य की वृद्धि भी होती है। यह घास भी लम्बी होकर गिरने लगती है। इसे स्थान-स्थान पर उस घास में बाँध दिया जाता है, जो सर्वाधिक पुरानी व अपेक्षाकृत अधिक लम्बी होती है। यही बढ़ी हुई पुरानी घास समाज के पूर्वजन्मा पितरों का प्रतिरूप होकर नवजन्मा घास (सन्तति) को अपने शुभ विचारों से नियंत्रित करती है।

मनुष्य के प्रकरण में प्राण-प्रपोषित शुद्ध वायु और अपान-प्रदूषित गन्ध वायु मानी जाती है। प्राण का संभरण किया जाता है और अपान का निष्कासन किया जाता है, मुख्य रूप से इसका निष्कासन नासिका एवं गुदा के द्वारा होता है। मंत्र में वर्णित यही प्रक्रिया यदि उलट जाती है तो त्याज्य को ग्राह्य कर लेने से, यह मनुष्य के लिए मरणान्तक स्थिति होती है। यहाँ पर एक हास्य प्रसंग याद आ गया। आचार्य मुरारीलाल ने प्रोफेसर गोपीनाथ से कहा- आइए पान खा लीजिये, उन्होंने उत्तर दिया मैं पानभक्षी नहीं हूँ। आचार्य जी ने फिर व्यंग्य कस दिया आप 'अपान भक्षी' हैं? इस पर प्रोफेसर ने और तगड़ा व्यंग्यबाण छोड़ दिया-श्रीमान्! इसे आप अपने मुख में ही रखिये। प्राण-अपान की प्रक्रिया उलट जाने से मानव की मृत्यु अवश्यंभावी है।

विषमलैंगिकता यदि समलैंगिकता में बदल जाती है तो समग्र मानवता की ही मृत्यु सुनिश्चित समझनी चाहिए। यदि गर्भाधान ही नहीं होगा तो सन्तान कहाँ से होगी? सामवेद (५०२) मनुष्य की गरिमा का गान करते हुए उसे सूर्य पुत्र बने रहने की प्रेरणा प्रदान करता है।

अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः।
रुचे जनन्त सूर्यम्॥

अर्थात् सोम (वीर्य) के संयम से कान्ति व शोभा के लिए संयमी पुरुष अपने अन्दर एक विशिष्ट दृष्टिकोण को उत्पन्न करते हैं जिससे वे विषयों से अबद्ध रहकर अपने ज्ञान को उत्तरोत्तर उद्दीप्त कर दिव्य गुणों को अपने अन्दर धारण करते हैं। वे पुराने व वृद्ध होकर भी युवानुरूप जीवन-निर्माण की सद् शिक्षाओं की चेतना से नवयौवनधारी सन्तति को सात्विक ऊर्जा से भरपूर बनाये रखते हैं। वेदानुमोदन से अनुप्रमाणित होकर महाभारतकालीन प्रखर नीतिवक्ता (वि. नी. ४.५२) महात्मा विदुर भी इस तथ्य का समर्थन करते हुए कह बैठते हैं।

बुद्धया मयंव प्रणुदति तपसा विन्दते महत्।
गुरुशुश्रूषया ज्ञानं शान्ति योगेन विन्दति।।

अर्थात् मनुष्य बुद्धि विवेक के द्वारा भय को दूर करता है, तप करके अपने बड़प्पन को प्राप्त करता है और गुरु मार्गदर्शकों की सेवा से ज्ञान व्यवहार को प्राप्त करता है तथा योगपूर्वक यम-नियम के पालन से सुख दुःखादि में सम रहकर आत्मिक शान्ति को प्राप्त करता है। यही वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शीर्षक में- 'हंस चला कौआ की चाल' का सुधार हो जाता है- कौआ कौआ और हंस-हंस बना रहता है और मानव, वंश का अवतंस बनकर संसार में चमकता है।

– देवनारायण भारद्वाज
वरेण्यम, अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००१ (उ. प्र.)

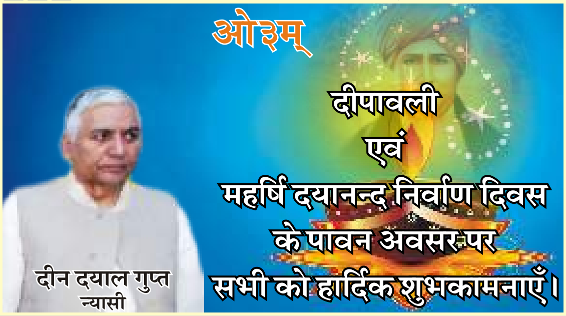

आनन्द सुधासार दया कर पिला गया

लेखक- महाकवि श्री शंकर जी

भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।
डाला सुधार-वारि बढ़ी बेल मेल की,
देखो समाज फूल फबीले खिला गया।
काँटे कराल जाल अविद्या-अधर्म के,
विद्या-वधू को धर्म-धनी से मिला गया।
ऊँचे चढ़े न क्रूर कुचाली गिरा दिये,
यज्ञाधिकार वेद पढ़ों को दिला गया।
खोली न कहाँ पोल ढके ढोंग ढोल की?
संसार के कुपन्थ मतों को हिला गया।
'शंकर' दिया बुझाय दिवाली को देह का,
कैवल्य के विशाल बदन में विला गया।।

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (षष्ठ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ क्र	१		१	या	१		य १	२ ध	२
३ अ		३ र	३	■	४ म	४	पा	४	■
५	र ५	■	६ द		६	य ६	■	७	७ ख

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. लेन-देन में होने वाले विवाद को क्या कहा गया है?
२. किसका संग कभी नहीं छूटता?
३. परस्पर विरुद्ध व्यवहार कितने प्रकार के होते हैं?
४. सभा में अन्याय होता देख जो मौन रहे अथवा सत्य-न्याय के विरुद्ध बोले वह व्यक्ति कैसा है?
५. राज्यसभा में अधर्म किया जाए तो कितने प्रकार के लोग अधर्म के भागीदार हो जाते हैं?
६. जो साक्षी मिथ्या बोलें उनको कैसा माने?
७. जो साक्षी सत्य बोलता है उसे जन्मान्तर में क्या प्राप्त होता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०८/१७ का सही उत्तर

१. सुख २. दुष्ट व्यसन ३. असूया ४. बुरा
५. अमात्य ६. एक ७. आप्त पुरुषों

"विस्तृत नियम पृष्ठ ११ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ नवम्बर २०१७

आर्य नरेश की आर्य नगरी शाहपुरा

राजस्थान में अजमेर से १२५ कि.मी. दूर दक्षिण पूर्व तथा भीलवाड़ा से ५१ कि.मी. दूर उत्तर पूर्व दिशा में स्थित शाहपुरा आर्य समाज की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी स्थापना महाराणा प्रताप के सुपौत्र सुजान सिंह जी ने दिल्ली के बादशाह शाहजहां के नाम पर १४ दिसम्बर १६३१ को कर शाहपुरा नाम रखा था। राजस्थान बनने से पूर्व शाहपुरा एक छोटी देशी रियासत रही है।

यह परम सौभाग्य रहा है कि शाहपुरा में आर्य समाज के महान् प्रवर्तक स्वराष्ट्र स्वसंस्कृति व स्वभाषा के प्रबल समर्थक, स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के पुरोधा, राष्ट्रोद्धारक, अखण्ड ब्रह्मचारी महान् योगी, परिव्राट संन्यासी, समाज सुधारक, सत्य सनातन वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक व वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वती का पदार्पण तत्कालीन आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहर सिंह जी के.सी.आई.ई. के निमंत्रण पर दिनांक ८ मार्च १८८३ को हुआ।

राजस्थान की यात्रा के पीछे महर्षि दयानन्द सरस्वती का यह दृष्टिकोण रहा कि यदि राजा महाराजाओं को अपना कर्तव्यबोध करा दें तो देश का शासन सुधर कर आर्यावर्त्त की उन्नति हो सकती है। देश का खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती को शाहपुरा में रेतिया बाग पैलेस 'नाहर निवास' में नव निर्मित कुटिया में ठहराया गया था जो आज महर्षि कुटिया के नाम से प्रसिद्ध है। स्वामी जी महाराज २६ मई १८८३ तक शाहपुरा में ठहरे। यहाँ स्वामी जी ने अपना विशेष समय ऋग्वेद का भाष्य करने में व्यतीत किया। यहाँ आर्य नरेश नाहर सिंह जी को योग, न्याय एवं वैशेषिक दर्शन के कुछ भाग का अध्ययन कराया था तथा मनुस्मृति के सातवें, आठवें एवं नवें अध्याय के राजधर्म विषय को भली प्रकार समझाया था। उन्हें योग, प्राणायाम व ध्यान की विधि भी पूर्णरूप से सिखाई थी। राज्य का आदर्श सूत्र 'क्षात्रेयस्य परोधर्मः प्रजानामेव पालनम्' (क्षत्रिय का परम धर्म प्रजा का पालन करना है।) आज भी राजमहल के मुख्य द्वार पर ताम्रपत्र पर अंकित है।

राजाधिराज स्वामी जी के अनन्य भक्त एवं शिष्य रहे हैं। उनकी शिक्षा व उपदेशों का क्रियात्मक उपयोग राज्य शासन में किया है। इसीलिए इस नगर को आर्य नगरी व राजा को आर्य नरेश के रूप में आर्य जगत् में जाना जाता रहा है। यहाँ शिक्षा, न्याय, कृषि, पानी, कला, कौशल, पुलिस व बिजली आदि की सुखद व्यवस्था रही है। विशेष रूप से वैदिक धर्म की शिक्षा, विद्यालयों में अनिवार्य रूप में दी जाती रही है। इसी परम्परा का निर्वाह नाहर सिंह जी के सुपुत्र राजाधिराज उम्मेद सिंह जी व सुपौत्र राजाधिराज सुदर्शन देव जी ने भली प्रकार किया। इस प्रकार तीन पीढ़ियों तक राज्य परिवार लगातार आर्य समाज एवं वैदिक धर्म से जुड़ा रहा। राजाधिराज सुदर्शन देव जी ने एक कदम और आगे बढ़ाते हुए १४ अगस्त १९४७ को ही अपनी राजसत्ता जनता के प्रतिनिधियों को सौंपकर अपने राज्य में प्रथम उत्तरदायी शासन की स्थापना की। देश के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु, गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने प्रशंसा करते हुए बधाई संदेश भिजवाये।

शाहपुरा के क्रान्तिकारी बारहठ परिवार ने देश की स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। कुण्डगेट के बाहर भव्य रूप में स्थापित त्रिमूर्ति स्मारक इस बात का प्रमाण है। इसमें ठाकुर केसरीसिंह जी, जोरावर सिंह जी व कुँवर प्रताप

सिंह जी की सुन्दर व आकर्षक प्रतिमाएँ मार्ग में छतरी के नीचे सुशोभित हैं। इस त्रिमूर्ति चौराहा पर प्रतिवर्ष २३ दिसम्बर को बारहठ मेले का भव्य आयोजन किया जाता है। ठा. केसरी सिंह जी के पिता श्रीकृष्ण सिंह जी बारहठ स्वामी दयानन्द के परमभक्त रहे हैं। इनका स्वामी जी से उदयपुर प्रवास के समय नजदीकी सम्पर्क रहा है। उदयपुर महाराणा सज्जन सिंह के सुस्वास्थ्य एवं राज्य शासन सुधार के बारे में जानकारी हेतु पत्र व्यवहार स्वामी जी महाराज कृष्ण सिंह जी के माध्यम से ही करते रहे थे। राष्ट्र सेवा की भावना इनके परिवार में आई, वह स्वामी जी की ही देन है।

वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की दृष्टि से शाहपुरा का गौरव पुनः स्थापित हो इसके लिए उचित कदम उठाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार जन्म स्थली की दृष्टि से टंकारा, प्रथम आर्य समाज की स्थापना की दृष्टि से मुम्बई, सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली की दृष्टि से उदयपुर और निर्वाण स्थली होने से अजमेर भिनाय कोठी का महत्व है उसी प्रकार देश में आर्य नरेश व आर्य नगरी होने से शाहपुरा का विशेष महत्व है। यहाँ की कई चीजें आज भी दर्शनीय एवं महत्वपूर्ण है।

१. रेतिया बाग पैलेस में स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती की कुटिया ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, जहाँ अढ़ाई माह

विराज कर स्वर्गीय राजाधिराज नाहर सिंह जी को वैदिक धर्म का उपदेश दिया था। रेतिया बाग पैलेस में राजाधिराज इन्द्रजीत देव जी रहते हैं जो स्वर्गीय राजाधिराज सुदर्शन देव जी के सुपुत्र हैं। वर्तमान में आप आर्य समाज व श्रीमद् दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र के आजीवन संरक्षक हैं। आपके कोई सन्तान न होने के कारण बड़े बाई सा. श्रीमती महेन्द्र कुमारी के साथ भाणेजा बन्ना श्रीमान् शत्रुजीत सिंह जी व श्रीमान् जयसिंह जी यहाँ निवास कर रहे हैं। रेतिया बाग पैलेस को बहुत सुन्दर व आकर्षक बना दिया है जिसे देखने के लिए पर्यटक आने लगे हैं। महर्षि कुटिया की भी मरम्मत करवाई गई है जो इन्हीं के अधिकार क्षेत्र में है। राजपरिवार पुनः आर्य समाज की गतिविधियों में रुचि लेने लगा है। यहाँ यज्ञशाला में दैनिक यज्ञ भी प्रारम्भ कर दिया है। इस स्थान की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए अधिकारिक सभाओं को इस ओर दृष्टिपात करना चाहिए तथा इस स्थान को और दर्शनीय एवं आर्य समाज की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बनाने हेतु योजना बनानी चाहिए।

२. पुराने राजमहल के ठीक नीचे पश्चिम दिशा में यज्ञशाला नजर बाग स्थित है जो धार्मिक कर्मकाण्ड की दृष्टि से विशेष ढंग से निर्मित है। इसमें विभिन्न आकृतियों के पाँच कुण्ड मिट्टी के बने हुए हैं। प्रकाश और हवा के लिए दरवाजे, खिड़कियाँ व उजालदान, गैलेरी आदि बनी हुई हैं। यह यज्ञशाला महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वर्गीय राजाधिराज नाहर सिंह जी के लिए शाहपुरा प्रवास के समय बनवाई थी। ऐसी ही यज्ञशाला पंडित छत्रदत्त जी पौण्डरीक की हवेली में भी बनाई थी। दोनों यज्ञशालाएँ आज भी मौजूद हैं। यज्ञशाला नजर बाग में स्वर्गीय श्री जयसिंह जी बड़गूजर व उनकी पत्नी स्वर्गीय सुखसागर देवी तथा स्वर्गीय श्रीमती अन्नपूर्णा देवी जी भारद्वाज दैनिक यज्ञ करती रही थीं। वर्तमान में आर्य समाज के प्रधान श्री कन्हैया लाल जी आर्य की देखरेख में इस ऐतिहासिक यज्ञशाला का जीर्णोद्धार किया जा रहा है।

३. शाहपुरा के सदर बाजार बालाजी की छतरी के पास आर्य समाज मंदिर का भवन स्थित है जो पुराने समय में एक निजी मंदिर ही था। राजाधिराज नाहर सिंह जी द्वारा आर्य समाज को यह स्थान भेंट किया गया था। यहाँ नियमित रूप से साप्ताहिक अधिवेशन एवं विशेष पर्व आदि के कार्यक्रम होते रहते हैं। बाहर से आने वाले विद्वान् संन्यासी व उपदेशकों के प्रवचन आदि के कार्यक्रम सोत्साह आयोजित होते रहते हैं। इस बार सम्पूर्ण भवन की मरम्मत व रंग रोगन किया गया है। अतिथि कक्ष के साथ नया शौचालय व स्नानागार भी बनाया गया है। पानी की व्यवस्था के लिए पाईप लाइन भी डाली गई है। यहाँ पुराना पुस्तकालय कक्ष भी है जहाँ प्राचीन समृद्ध साहित्य उपलब्ध है। वाचनालय में पढ़ने के लिए कई दैनिक पत्र व पत्रिकाएँ रखी जाती हैं। यहाँ आर्य पुरुष व अन्य नगरवासी पढ़ने के लिए आते हैं।

४. आर्य नरेश स्वर्गीय सुदर्शन देव जी व आर्य महारानी स्वर्गीय हर्षवन्त कुंवर बा द्वारा प्रदत्त एवं स्थापित श्रीमद्

दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र का विशाल भवन भी देखने योग्य है। यहाँ महिलाओं के लिए समाज कल्याण बोर्ड से मान्य कन्डैन्स कोर्स (संक्षिप्त पाठ्यक्रम मिडिल/सैकेण्ड्री) एवं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र भी चलता रहा है। वर्तमान में दयानन्द उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं बालवाड़ी संचालित है जो शिक्षा विभाग भीलवाड़ा से स्थाई मान्यता प्राप्त है। दो सत्र से यह विद्यालय निःशुल्क चल रहा है। इसमें आर्थिक दृष्टि से कमजोर, गरीब, निःसहाय छात्र-छात्राओं के लिए शिक्षण की व्यवस्था है। छात्र छात्राओं को पाठ्य पुस्तकें, वेशभूषा व शिक्षण सामग्री आदि संस्था की ओर से निःशुल्क दी जा रही है। इसके लिए दानदाताओं का पूरा सहयोग मिल रहा है। स्टॉफ को मानदेय भी राज परिवार के श्री सुदर्शन चेरिटेबल ट्रस्ट से प्राप्त हो रहा है। इस समय ११५ विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। संस्था के प्रांगण में आर्य समाज की ओर से बृहद् यज्ञ, वार्षिकोत्सव एवं विशेष समारोह समय समय पर आयोजित होते रहते हैं। इस भवन की भी आवश्यक मरम्मत पुताई व रंग रोगन आदि करायी गयी है। आर्य समाज की प्रबन्ध समिति इस संस्था की देखरेख करती है।

५. नगर के बाहर उदयभान गेट के पास आर्य समाज की एक ऐतिहासिक धरोहर शर्बत विलास यज्ञशाला स्थित है जिसका उद्घाटन दिनांक १५ अक्टूबर १९४१ को महाशय आचार्य कृष्ण जी ने किया था तथा ध्वजारोहण स्वर्गीय राजाधिराज श्री सुदर्शन देव जी ने अपने करकमलों से किया। काफी समय से यहाँ दैनिक यज्ञ बन्द है। आबादी क्षेत्र में आने से यहाँ अतिक्रमण, टूट-फूट एवं यज्ञशाला भी जीर्ण-शीर्ण हो गई है। इसका जीर्णोद्धार कराना भी आवश्यक है।

६. सरोवर यज्ञशाला जो रावला घाटा के पास स्थित है, इसका जीर्णोद्धार श्री कन्हैयालाल जी आर्य, प्रधान आर्य समाज की देखरेख में स्वर्गीय श्रीमान् माधोसिंह जी न्याती के परिवार द्वारा जो कोटा में रहते हैं, कराया गया है। वर्तमान में प्रतिदिन ४-५ आर्य सभासद यहाँ यज्ञ करते हैं। इसमें श्री कन्हैया लाल जी आर्य, श्री बालमुकुन्द जी बघेरवाल, श्री मदन मोहन जी सुगन्धी एवं श्री शान्ति लाल जी लाखोटिया मुख्य हैं।

७. पिवनियाँ तालाब के पश्चिम किनारे पर आर्य समाज की धरोहर दयानन्द आश्रम स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष श्रावणी पर्व पर विशेष यज्ञ एवं समारोह का आयोजन होता है। इस आश्रम में स्वर्गीय राजाधिराज नाहर सिंह जी की संगमरमर की बनी सुन्दर व आकर्षक छतरी है। स्वर्गीय राजाधिराज व रानियों का अंतिम संस्कार इसी छतरी के पास किया गया था। इसी आश्रम में एक पुरानी कोठी भी है जिसकी मरम्मत कराई गई है तथा कुएँ में मोटर भी लगाई गई है तथा बिजली की व्यवस्था है। जल यात्रा एकादशी को आर्य समाज की ओर से विशेष यज्ञ, रंग बिरंगी रोशनी एवं महापुरुषों की झाँकी व चलचित्र की व्यवस्था की जाती है जिसे देखने के लिए सैंकड़ों नगरवासी आश्रम में आते हैं और आनन्द लेते हैं। यह आश्रम तालाब किनारे होने से वर्षभर हरियाली बनी रहती है। आर्य समाज के द्वारा गठित एक उप समिति ने इसके विकास का कार्य हाथ में लिया है। इस स्थान को योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना है। यहाँ एक चौकीदार की व्यवस्था भी है। नये पेड़ पौधे भी लगाए गए हैं। सुरक्षा के लिए चारों ओर बाड़बन्दी भी की गई है। यह एक सुन्दर पिकनिक स्थल भी है। यहाँ प्रातः घूमने व योग प्राणायाम के लिए आदमी आने लगे हैं।

उपरोक्त उल्लेखित सभी दर्शनीय स्थलों के कारण आर्य नगरी शाहपुरा का विशेष महत्व आर्य जगत् में प्रतिपादित होता है। इस दृष्टि से सबका ध्यान आकर्षित करने के लिए यह लेख तैयार किया है।

- हीरालाल आर्य
'सूर्य निवास' नई आबादी, शाहपुरा
जिला-भीलवाड़ा (राज.)

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

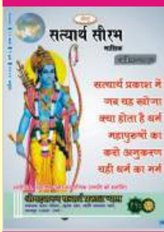

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ ११ पर देखें।

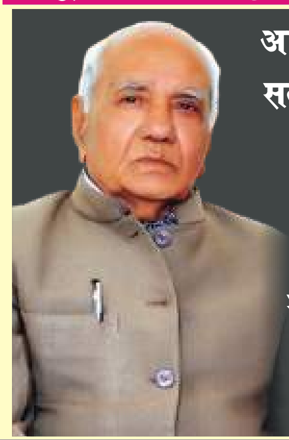

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु श्री शुद्धबोध जी शर्मा, श्रीगंगानगर ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री

दीपावली का रामकथा से सम्बन्ध- एक भ्रम

सामान्यतया यह माना जाता है कि दशहरा और दीपावली का सम्बन्ध रामकथा से सम्बन्धित घटनाओं से है। दशहरा आश्विन मास की शुक्ल दशमी को मनाया जाता है। उत्तर भारत में इस अवसर पर रामलीला में श्री रामचन्द्र जी के द्वारा रावणवध का कार्यक्रम प्रमुखता से आयोजित किया जाता है। इसके लगभग बीस दिन बाद कार्तिक अमावस्या को दीपावली मनाई जाती है। यह प्रसिद्ध है कि इसी दिन श्री राम अपना वनवास पूरा करके सीता और लक्ष्मण सहित अयोध्या वापस आए थे और वहाँ उनका राज्याभिषेक हुआ था। अतः इस दिन अयोध्यावासियों ने दीपक जलाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी। समाज में कुछ लोग ऐसे हैं जो रामकथा को काल्पनिक मानते हैं, उनकी तो बात ही अलग है; पर अनेक लोग इसे ऐतिहासिक मानते हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 'रामकथा- उत्पत्ति और विकास' पर शोधकार्य करके अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित करने वाले डॉ. कामिल बुल्के ने रामकथा को ऐसी ऐतिहासिक घटना

माना है जिसकी प्रस्तुति वाल्मीकि ने (और उनके बाद उनके काव्य से प्रभावित होकर अन्य भी अनेक कवियों ने) अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए की है। आइये, हम भी इसे ऐतिहासिक मानते हुए रामकथा के तथ्यों के आलोक में यह देखें कि दशहरा और दीपावली को रामकथा से जोड़ना कितना तर्कसंगत है।

रामायणकालीन इतिहास हमें आज रामकथा से सम्बन्धित काव्यग्रंथों, कतिपय पुराणों, महाभारत, बौद्ध और जैन ग्रंथों में ही उपलब्ध है, पर इन ग्रंथों में रामकथा एक ही रूप में नहीं मिलती। इनमें से वाल्मीकि रामायण को रामकथा का सर्वप्रथम एवं प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है, पर यह ग्रंथ भी अपने मूलरूप में आज सुरक्षित नही। आज इसके तीन संस्करण मिलते हैं और उनके कथानक में बहुत अंतर है। वस्तुतः श्रीराम की यह कथा इतनी लोकप्रिय हुई कि बाद में अनेक कवियों ने इस पर काव्यरचना की और उसमें अपनी-अपनी रुचि के अनुसार नए-नए प्रसंगों की उद्‌भावना की। कुछ लोगों ने नई कृति की रचना करने के बजाय प्राचीन ग्रंथों में ही स्वरुचि के अनुरूप कुछ अंश जोड़ दिए जिन्हें आज विद्वान् लोग प्रक्षिप्त कहते हैं। इन प्रक्षेपों के कारण ही आज रामकथा के अनेक प्रसंगों के अलग-अलग रूप मिलते हैं। जैसे, सीता को कहीं जनक की पुत्री कहा है, तो कहीं रावण की या दशरथ की पुत्री बताया है, कहीं उन्हें भूमिजा, पद्मजा, रक्तजा आदि कहा है।

आज वाल्मीकि रामायण में सात कांड (बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकांड, सुन्दरकांड, युद्धकांड, और उत्तरकांड) मिलते हैं, पर विद्वानों का कहना है कि मूल वाल्मीकि रामायण का प्रारम्भ अयोध्या कांड से और समापन युद्ध कांड पर मानना चाहिए। बालकाण्ड और उत्तर कांड तो पूरे के पूरे प्रक्षिप्त हैं जो अन्य लोगों द्वारा बाद में जोड़े गए हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कांडों में भी अनेक प्रसंग प्रक्षिप्त हैं। जैसे, अवतारवाद से संबंधित सामग्री, स्वर्ण मृग का वृत्तांत, हनुमान द्वारा लंका-दहन, संजीवनी बूटी की तलाश में हनुमान की हिमालय यात्रा, रावण वध के बाद सीता की अग्नि परीक्षा, पुष्पक में श्री राम की अयोध्या को

वापसी, आदि। इन्हें प्रक्षिप्त सिद्ध करने के लिए विद्वान् लोग अनेक तर्क देते हैं। उदाहरण के लिए उत्तर काण्ड को देखें। कथानक की दृष्टि से इस कांड की सर्वाधिक प्रमुख घटना सीता त्याग की है, पर महाभारत में, या विष्णु पुराण, हरिवंश पुराण, वायु पुराण, नृसिंह पुराण जैसे रामकथा से संबंधित प्राचीन पुराणों में इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। अध्यात्म रामायण और कंबन की तमिल रामायण में भी इसकी कोई चर्चा नहीं। गुणभद्र कृत उत्तर पुराण में तो लंका से अयोध्या लौटने के बाद सीता के आठ पुत्र उत्पन्न होने की चर्चा की गई है। वहाँ सीता त्याग की ओर कोई संकेत तक नहीं। महाराज भोज के समय में 'चम्पू रामायण' लिखी गई, जिसे वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त रूप माना जाता है। इसमें भी केवल युद्ध कांड तक की कथा का वर्णन है।

इटली के एक विद्वान् गोरेशियो (Gasparе Gorresio-1808-1891) ने वाल्मीकि रामायण का इतालवी भाषा में अनुवाद (१८४७) किया था। यह यूरोप में रामायण का सबसे पहला अनुवाद था। उसने भी उत्तरकाण्ड को प्रक्षिप्त माना और अपने अनुवाद में इसे सम्मिलित नहीं किया।

उत्तर कांड को प्रक्षिप्त मानने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि कथा की फलश्रुति (कथा सुनने का लाभ, उसकी महिमा) कथा के अंत में कही जाती है और वाल्मीकि ने रामकथा की फलश्रुति युद्धकाण्ड के अंत में कह दी है। फिर भी अगर कोई फलश्रुति के बाद कथा को आगे बढ़ा रहा है तो यह प्रक्षिप्त होने का ही प्रमाण है ।

जहाँ तक दशहरा और दीपावली का संबंध है, रामायण के अयोध्या कांड के तृतीय सर्ग के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम राम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना निश्चित हुआ था

और उसी अवसर पर उन्हें १४ वर्ष के लिए वनवास हुआ, अर्थात वे चैत्र मास में वन के लिए गए। इस दृष्टि से देखें तो १४ वर्ष की अवधि चैत्र मास में ही पूरी होनी चाहिए, न कि आश्विन या कार्तिक में। जहाँ तक रावणवध का सम्बन्ध है, वह हमारी रामलीला का एक प्रमुख कार्य होता है। रामलीला का आयोजन गोस्वामी तुलसीदास की पहल पर शुरू हुआ था। उन्होंने स्वयं अपने रामचरितमानस में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि रावणवध चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को हुआ था। उनके शब्द हैं :

चैत्र शुक्ल चौदस जब आयी।
मरयो दशानन जग दुखदायी।।

पर हम तुलसी के सन्देश (चैत्र शुक्ल चौदस) को भूलकर रावण वध आश्विन मास की शुक्ल दशमी (विजयदशमी) को करने लगे हैं ।

विभिन्न विद्वानों ने रावण वध का समय यद्यपि अलग-अलग बताया है, फिर भी वह फाल्गुन से लेकर बैशाख के बीच ही आता है। जैसे, पं. महादेवप्रसाद त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक 'भक्ति विलास' में फाल्गुन सुदी एकादशी, पं. हरिशंकर दीक्षित ने 'त्योहार पद्धति' में चैत्र कृष्ण अमावस्या, पं हरिमंगल मिश्र एम ए. ने अपनी कृति 'प्राचीन भारत' के परिशिष्ट में बैशाख कृष्ण चतुर्दशी बताई है। रावण वध के बाद उसकी अन्त्येष्टि और फिर विभीषण के राज्यारोहण में अधिक समय नहीं लगा। उधर राम भरत के लिए भी चिंतित थे। वनवास की अवधि पूरी होते ही उन्हें अयोध्या अवश्य पहुँचना था, अन्यथा भरत के प्राण त्यागने की आशंका थी। इसी कारण राम ने कुछ दिन लंका में रुकने और विभीषण का आतिथ्य ग्रहण करने के आग्रह को भी स्वीकार नहीं किया। वे अयोध्या वापस आते समय जब भरद्वाज आश्रम में पहुँचे तब चैत्र शुक्ल पंचमी का दिन था। यह भी ध्यान देने योग्य है कि रावण वध के बाद अयोध्या तक की यात्रा में कार्तिक तक का समय नहीं लग सकता क्योंकि यह यात्रा प्रचलित मान्यता के अनुसार पुष्पक विमान से की गई, पैदल नहीं ।

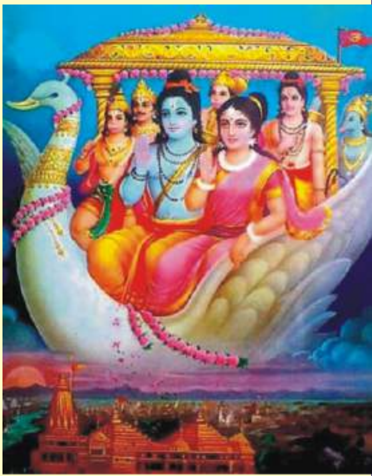

अयोध्या में राम के स्वागत के लिए जो आयोजन किया गया उसका वर्णन युद्ध कांड के सर्ग १२७ में किया गया है, पर उसमें 'दीपक' शब्द का एक बार भी उल्लेख नहीं हुआ है। वैसे भी राम आदि दिन के समय अयोध्या पहुँचे, अतः दिन में दीपक जलाने की कोई

आवश्यकता भी नहीं थी। रामायण में ऐसा भी कोई उल्लेख नहीं कि राम के स्वागत के सन्दर्भ में रात को भी कोई आयोजन किया गया हो।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कार्तिक अमावस्या को मनाई जाने वाली दीपावली का रामकथा से कोई सम्बन्ध नहीं है। वस्तुतः दीपावली (और होली) निश्चित रूप से इस कृषिप्रधान देश के बहुत प्राचीन त्योहार हैं, दशरथ पुत्र राम से भी पहले के त्योहार हैं जिनका सम्बन्ध ऋतु परिवर्तन और नई फसल तैयार होने से है। हमारे यहाँ दो मुख्य फसलें होती हैं जिन्हें आज हम रबी और खरीफ कहते हैं। रबी की फसल होली पर और खरीफ की फसल दीपावली पर तैयार होती है। प्राचीन काल में इन पर्वों पर विशाल यज्ञ (हवन) करने की परम्परा थी जिसे 'नवसस्येष्टि यज्ञ' (नई फसल आने के उपलक्ष्य में किया गया यज्ञ) कहते थे। दीपावली वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर मनाई जाती है। हम जानते ही हैं कि वर्षा ऋतु में तमाम चीजें सड़-गल जाती हैं और वातावरण को विषाक्त बना देती हैं। नाना प्रकार के कीड़े-मकोड़े भी बरसात में उत्पन्न हो जाते हैं जिनसे विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। अतः हमारे पूर्वजों ने यह परम्परा डाली कि इस अवसर पर घरों की सफाई-पुताई करके विशेष हवन किए जाएँ ताकि वायुमंडल शुद्ध हो जाए ।

कालान्तर में इस परम्परा को हम भूल गए और दीपावली पर लक्ष्मी पूजन की प्रथा विकसित हो गई। जरा विचार कीजिए कि अगर यह त्योहार भगवान राम से सम्बन्धित होता तो इस अवसर पर उनकी पूजा होनी चाहिए थी, न कि लक्ष्मी की? जहाँ तक लक्ष्मी की बात है, वह कृषक के लिए ही नहीं, हम सबके लिए भी अच्छी फसल के रूप में मानों साक्षात् रूप धारण कर लेती है। अतः लक्ष्मीपूजन भी इसी बात का प्रमाण है कि यह कृषि से सम्बन्धित त्योहार है। आधुनिक युग में ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट किया कि यदि वैज्ञानिक ढंग से विधिपूर्वक हवन किया जाए, तो उससे वायुमंडल शुद्ध होता है और विभिन्न रोगों से सम्बन्धित कीटाणुओं का नाश होता है। अनेक वैज्ञानिकों ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है।

अतः अनेक लोग अब दीपावली पर हवन करने लगे हैं, पर जिन तक यह सन्देश अभी नहीं पहुँचा है वे लक्ष्मी की पूजा करके ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। हमारे समाज की विडम्बना देखिए कि कुछ लोग इस अवसर पर मन को अशुद्ध करने वाले कर्म जुआ खेलने को 'शुभकर्म' मानने लगे हैं। ये लोग दुहाई देते हैं ब्रह्म पुराण की, जिसमें दीपावली के अगले दिन का नाम ही 'द्यूत (जुआ) प्रतिपदा' रखकर इस तिथि पर प्रभातकाल में जुआ खेलना अनिवार्य बताया गया है। हमने इसे तो पुराण की बात मानकर अपना लिया, पर जो काम पुराण में भी नहीं बताया गया था हम वह भी करने लगे, और वह है- ध्वनि और वायु को प्रदूषित करने वाली आतिशबाजी जिसे अब लोगों ने अपनी सम्पन्नता का प्रतीक मान लिया है, इसलिए जितने अधिक सम्पन्न उतनी अधिक आतिशबाजी। बात तो थी दीपावली पर वातावरण को शुद्ध करने की, पर हम तो उसे और अशुद्ध करने लगे हैं।

आप क्या सोचते हैं? अब जब दीपावली आएगी, तब उसका सही सन्दर्भ याद रख पाएँगे? घर की सफाई करने के बाद वातावरण को शुद्ध करने के लिए गाय के घी और सुगन्धित सामग्री से विशेष हवन करेंगे या .... ।

– पूर्व सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार,
पी/१३८, एम आई जी, पल्लवपुरम-२
मेरठ- २५०११० (उ. प्र.)
agnihotriravindra@yahoo.com
चलभाष- ०९७५८१८४४३२

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

यमी वैवस्वती

शिवनारायण उपाध्याय

यमी वैवस्वती ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त १० की ऋचा संख्या १, ३, ५, ६, ७, ११ व १३ की ऋषिका हैं। वास्तव में यह यमी और यम के संवाद के रूप में ही सारा सूक्त है। विद्वानों के इस विषय में भिन्न मत हैं। एकमत तो यह है कि यम और यमी भाई बहिन हैं। परन्तु यमी अपने भाई यम से शारीरिक सम्बन्ध बनाना चाहती है तो यम उसे अस्वीकार करके कहता है कि भाई और बहिन के मध्य में जो पवित्र सम्बन्ध है उसे तोड़कर पति-पत्नी में बदल देना धर्म के विरुद्ध है। यमी उसे स्वीकार नहीं करती है। दोनों अपने अपने पक्ष में तर्क देते हैं। दूसरे मत के अनुसार यह पति पत्नी का संवाद है। पति नपुंसक है इसलिए पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं बना सकता है। वह पत्नी को नियोग द्वारा दूसरे किसी व्यक्ति से सम्बन्ध बनाकर सन्तान उत्पत्ति की सलाह देता है। मैं समझता हूँ कि हमें इस सूक्त के द्वारा मुख्य रूप से यह बताया गया है कि भाई और बहिन के सम्बन्ध को पति-पत्नी के सम्बन्ध में रूप में नहीं बदला जाना चाहिए। विज्ञान की भी यही मान्यता है कि निकट सम्बन्ध में विवाह होने से श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न नहीं होती है। यह भी देखने में आया है कि जहाँ ऐसे सम्बन्ध हो गए हैं वहाँ विकृत सन्तान की उत्पत्ति हुई है।

दूसरा विचार यह है कि यदि पति-पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने में असमर्थ हो, नपुंसक हो, लम्बे समय से अस्वस्थ हो सन्तान उत्पन्न करने में असमर्थ हो तो पत्नी को यह स्वतंत्रता मिलनी चाहिए कि वह नियोग पद्धति अपना कर अपने वास्तविक पति के लिए सन्तान उत्पन्न कर ले। यह प्रथा भी अति प्राचीन है। वैदिक धर्म ही नहीं वरन् यहूदी धर्म में भी इसे मान्यता प्राप्त है।

इस सूक्त का एक तीसरा पक्ष भी है जो इसे सूर्य और रात्रि के संवाद के रूप में लेता है।

अधिकांश विद्वानों ने सूक्त के प्रथम दो भिन्न संवादों के रूप में ही मंत्रों का अर्थ किया है। मेरी दृष्टि से यह सूक्त केवल पति के पत्नी से शारीरिक सम्बन्ध न बना पाने पर पत्नी क्या करे? इसका हल सुझाता है। यम और यमी दोनों काल्पनिक व्यक्ति हैं। इति।

७३- शास्त्रीनगर, दादाबाड़ी
कोटा-३२४००९ (राज.)

शोक सन्देश

छोटी सादड़ी (जिला-प्रतापगढ़, राजस्थान) के पास गाँव गोमाना के निवासी श्री घीसालाल जी पाटीदार आर्य जगत् में जाना माना नाम था। बासाहब घीसा लाल जी ने अपने गाँव मे अनेकों नामी वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में अनेक बार वैदिक स्वस्ति शांति महायज्ञों का आयोजन कराया। उनके विशेष प्रयासों से गोमाना मेंआर्य विद्या मंदिर प्रारम्भ हुआ था।

ऐसे कर्मठ ऋषि दयानन्द का सिपाही हरदम अपने व्यवहार कुशल पुरुषार्थ, सदैव संतोष एवं प्रसन्नता से ८६ बसंत इस लोक में ऋषि मिशन-वेद प्रचार में समर्पित कर प्रभु इच्छा से प्रभु के सानिध्य में दिव्य लोक की यात्रा हेतु १३ अगस्त २०१७ को चिरनिद्रा में समाकर चले गए। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए.

समाचार

श्रावणी उपाकर्म व चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज, सेक्टर २२-ए, चण्डीगढ़ के तत्त्वावधान में उक्त कार्यक्रम भव्य रूप से ३१ जुलाई से ६ अगस्त १७ तक मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मवेश, आचार्य राजू वैज्ञानिक, डॉ. वीरेन्द्र अलंकार, डॉ. विक्रम विवेकी एवं श्री कल्याणसिंह बेदी आदि सुविख्यात विद्वानों के उद्बोधन अत्यन्त प्रभावशाली रहे।

– डॉ. अशोक पाल जग्गा, प्रधान

महेश सोनी, पुनः प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर के वार्षिक निर्वाचनों में श्री महेश सोनी को पुनः प्रधान पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित किया है। श्री महेश सोनी को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से अनेकानेक शुभकामनाएँ।

श्रावणी उपाकर्म व अष्टम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

दिनांक ७ से २२ अगस्त २०१७ में पर्यावरण प्रदूषण समस्या ग्लोबल वार्मिग की समस्या के निवारणार्थ १६ दिन का महायज्ञ गुरुकुल, हरिपुर के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सानिध्य में श्रद्धा और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

– दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य

भीलवाड़ा जिले में नये आर्य समाजों की स्थापना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा भीलवाड़ा के तत्वावधान में ७ नई आर्य समाजों का गठन किया जाकर वहाँ अधिकारियों का चुनाव सम्पन्न कराया गया। इन आर्य समाजों के नाम हैं।

१. आर्य समाज, कनेछनकलां २. आर्य समाज, करेड़ा ३. महिला आर्य समाज, शास्त्रीनगर, हमीरगढ़, ४. आर्य समाज, सुवाणा ५. आर्य समाज, कोटड़ी ६. आर्य समाज, वकील कॉलोनी; माण्डलगढ़, ७. आर्य समाज; बिजौलिया

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, भीलवाड़ा के सभी पदाधिकारियों को साधुवाद।

आर्य समाज, रामनगर के निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज, रामनगर, गुडगाँव के वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न होकर निम्न पदाधिकारियों का निर्वाचन सर्व सम्मति से हुआ।

प्रधान- श्री ओमप्रकाश चुटानी

मंत्री- श्री राधाकृष्ण सोलंकी

कोषाध्यक्ष- श्री भगवानदास मनचन्दा

सभी अधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, भरतपुर का निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक १७ सितम्बर २०१७ को चुनाव अधिकारी श्री रामसिंह वर्मा की

उपस्थिति में आर्य उप प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन सम्पन्न हुए जिसमें श्री ओमप्रकाश बुनसारा को प्रधान श्री सत्यदेव आर्य को मंत्री एवं श्री वीरेन्द्र सिंह को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार कीओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज,निम्बीजोधा, तहसील लाडनू जिला नागौर के तत्वावधान में उक्त महायज्ञ दिनांक ४ अक्टूबर से ६ अक्टूबर २०१७ में आयोज्य है। इस कार्यक्रम में पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, सांसद, सीकर, आचार्य सोमदेव (अजमेर) एवं भजनोपदेशक दिनेश दत्त जी की उपस्थिति उल्लेखनीय रहेगी।

– नानूराम आर्य, प्रधान

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज, अजमेर के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह तथा सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन ७ सितम्बर २०१७ से १० सितम्बर २०१७ तक डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. विष्णुमित्र वेदार्थी के प्रवचन और श्री सहदेव जी के भजनों से उपस्थित श्रोता लाभान्वित हुए।

– प्रो. रासासिंह

तपोनिष्ठ स्वामी ध्यानानन्द जी का आकस्मिक निधन

छोटी सादड़ी (प्रतापगढ़) सादगी की प्रतिमूर्ति वैदिक मूर्धन्य विद्वान्

स्वामी ध्यानानन्द (पूर्व ब्रह्मचारी सत्यदेव) का आकस्मिक निधन ३० अगस्त २०१७ को ७६ वर्ष की उम्र मे छोटी सादड़ी में हो गया। वे यम नियम युक्त अपनी दैनिक दिनचर्या के प्रति सजग तथा लोकैषणा, वित्तैषणा से कोसों दूर सादा जीवन उच्च विचार सत्यनिष्ठ वैदिक धर्म के मर्मज्ञ एवं प्रचारक उच्च कोटि के संन्यासी थे। स्वामी जी का एक ही वक्तव्य था कि- 'हमारा चिन्तन, कर्म व चरित्रवान् जीवनचर्या अपने आप में वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रभावपूर्ण प्रचार माध्यम या साधन होना चाहिये।' प्रत्येक आर्य को अपनी संयमित नियमित दिनचर्या पर संतुष्टि व गर्व होना चाहिए। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है। – भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०७/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ०७/१७** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजयनगर (राज.), श्री इन्द्रजित देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री रमेश आर्य; गुरदासपुर (पंजाब), श्री अच्च्युता हरकाल; अहमदनगर (महाराष्ट्र), श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), वासुदेव भाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); डिसा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; डिसा (गुजरात), श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली, श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरि.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; भीलवाड़ा (राज.), श्री हीरा लाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झँवर; सिहोर (म.प्र.), श्री तुलसीराम आर्य; बीकानेर (राज.), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म. प्र.), श्री महेश सोनी; बीकानेर (राज.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ ११ पर अवश्य पढ़ें।

।।ओ३म्।।

गत वर्ष ३५००० दर्शक सत्यार्थ प्रकाश रचनास्थली के दर्शन करने आये

प्रिय पाठकगण, अनेक बार ऐसी स्थिति बन जाती है कि नैराश्य के वातावरण में भी एक सुखद अनुभूति का अनुभव व उत्साह का सृजन हो जाता है। मैं एक दिन नवलखा महल में सदैव की भाँति ऑफिस में बैठ कार्य कर रहा था। बाहर बारिश हो रही थी, इतने में कुछ लोग ऑफिस में पधारे, उनके वस्त्र भीगे हुए थे। जब मैंने उन्हें विराजने के लिए कहा तब वे बोले हमारे वस्त्र भीगे हैं कुछ शीघ्रता भी है अतः अपनी बात कहकर हम जायेंगे। उन्होंने कहा- 'आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा' अत्यन्त ही प्रेरक तथा आकर्षक है। तपोमूर्ति दयानन्द जी के जीवन व उनके उपकारों को जान हम अत्यन्त प्रभावित हुए हैं आपसे यह विनती है कि चित्रदीर्घा का शुल्क ५ रुपये आपने काफी कम रखा है, इसे बढ़ाइए। इसका शुल्क कम से कम ५० रुपये होना चाहिए। जब उनसे कुछ अधिक बात कीं तो ज्ञात हुआ कि वे अलवर से थे और इससे पूर्व आर्य समाज के सम्पर्क में नहीं आये थे 'एक ऐसे व्यक्ति के मुख से जिसने प्रथम बार महर्षिवर का परिचय प्राप्त किया था, यह सब सुनकर अच्छा लगा।' यह अकेली घटना नहीं थी महीने में चार-पाँच बार ऐसा हो जाता है।

'अनेक आकर्षक प्रकल्पों के माध्यम से अधिकाधिक दर्शकों को बुलाया जाय और उन्हें वैदिक संस्कृति से परिचित कराया जाय' न्यास का यह जो प्रचार-आधार सूत्र बनाया गया है वह आशातीत रूप से सफल हो रहा है। आप सभी के सहयोग से इस महल को हम वास्तव में सुन्दर महल जिस दिन बना पायेंगे, एक लाख दर्शकों को बुला पाएँगे यह निश्चित है।

अतः आप सभी से निवेदन है कि महर्षि की इस कर्मस्थली पर एक बार अवश्य पधारें। और अभी अवसर भी है, वह है

२०वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

दिनांक ४ से ६ नवम्बर २०१७, स्थान- नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर

निम्नांकित वरेण्यजन समारोह की शोभा बढ़ाने तथा अपने ओजस्वी उद्बोधन से हमें अपने जीवन को ऊँचाइयों की ओर ले जाने की प्रेरणा देने हेतु पधार रहे हैं-

स्वामी प्रणवानन्द जी; दिल्ली, स्वामी सुमेधानन्द जी; (सांसद) सीकर, स्वामी ओम् आनन्द जी; चित्तौडगढ़, स्वामी आर्यवेश जी; दिल्ली, स्वामी आर्येशानन्द जी; पिण्डवाडा, आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक; भीनमाल, साध्वी उत्तमा यति जी; अजमेर, साध्वी पुष्पा जी सरस्वती; रेवाड़ी, न्यायमूर्ति श्री एस.एस.कोठारी; लोकायुक्त जयपुर (राज.), डॉ. सत्यपाल सिंह, केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री; दिल्ली, ठाकुर विक्रम सिंह; नई दिल्ली, श्री विद्यामित्र ठुकराल; नई दिल्ली, डॉ. आनन्द जी (IPS); दिल्ली, श्री रासासिंह रावत; अजमेर, श्री सत्यव्रत सामवेदी; जयपुर, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश; जोधपुर, डॉ.महावीर मीमांसक; दिल्ली, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय; दिल्ली, आचार्य सोमदेव शास्त्री; मुम्बई, आचार्य वेदप्रिय शास्त्री; केलवाड़ा, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री; अमेठी, आचार्य धनंजय जी; देहरादून, डॉ. देव शर्मा; दिल्ली, श्री जीववर्द्धन शास्त्री; बांसवाड़ा, श्री अमरसिंह; ब्यावर, श्री विनय आर्य; दिल्ली, श्रीमती गायत्री पंवार; जयपुर, श्री भीष्म जी (भजनोपदेशक); बिजनौर, श्री कल्याण वेदी (भजनोपदेशक); रुड़की, श्री सुरेश चन्द्र आर्य; अहमदाबाद, श्री विजय सिंह भाटी; जोधपुर, श्री विजय शर्मा; भीलवाड़ा, श्री बी. एल. अग्रवाल; जयपुर, श्री दीनदयाल गुप्त; कोलकाता, श्री मोती लाल आर्य; आबू रोड़, बाबू मिठाई लाल सिंह; मुम्बई, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

इनके अतिरिक्त भी अनेक गणमान्य अग्रजों के पधारने की अपेक्षा है

१. नवम्बर में रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया गर्म वस्त्र व बिस्तर साथ लावें।

२. अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें, ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।

३. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें अथवा दूरभाष से सूचित करें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। यह व्यवस्था सशुल्क होगी। सम्पर्क- +919829063110, +919314535379

कृपया अपना अर्थ सहयोग श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के नाम चैक या डिमान्ड ड्राफ्ट से भेजें। बैंक खाते का पूर्ण विवरण इसी पत्रिका के पृष्ठ ३ पर देखें। न्यास को दिया दान आयकर अधिनियम की धारा 80 G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

निवेदक- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयुपर- 313001 (राज.)

डायबिटीज में फल

वैसे तो डायबिटीज में भी आप एक आम स्वस्थ इंसान की तरह अलग-अलग प्रकार के फलों का सेवन कर सकते हैं। लेकिन डायबिटीज के मरीजों को केले, अंगूर, आम, लीची और सेब जैसे फलों से परहेज करने की सलाह दी जाती है। ऐसा इन फलों में मौजूद कार्बोहाइड्रेट यानी फ्रक्टोज और सुक्रोज के कारण ब्लड में शुगर के स्तर में इजाफा के कारण होता है। लेकिन फल शरीर में जरूरी विटामिन, मिनरल, एंटी-आक्सीडेंट और फाइबर की आपूर्ति करते हैं। इसलिए डायबिटीज के मरीजों को नियमित रूप से कम से कम फल को अपने आहार में जरूर शामिल करना चाहिए। आइए डायबिटीज के लिए उपयोगी कुछ ऐसे ही फलों की जानकारी लेते हैं।

एक सेब रोज खायें और स्वस्थ जीवन पायें

सेब को एक नकारात्मक कैलोरी आहार माना जाता है क्योंकि इसके पाचन में अधिक मात्रा में कैलोरी की आवश्यकता होती है। सेब में पेक्टिन की मात्रा अधिक होती है, जो कि डायबिटीज के मरीज के लिए डिटाक्सीफाइ की तरह काम करता है। इसके अलावा सेब में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।

चेरीज और बेरीज

यह मधुमेह रोगियों के लिये बहुत ही स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। इन मीठे और खट्टे फलों में विशेष प्रकार का केमिकल एन्थोसाइनिन पाया जाता है। यह केमिकल न सिर्फ चेरी को गहरा रंग प्रदान करता है बल्कि शरीर में इन्सुलिन की मात्रा को नियंत्रित रखता है।

ग्रेपफ्रूट यानी स्वाद और फिटनेस साथ-साथ

ग्रेपफ्रूट एक खट्टा फल है जो सम्पूर्ण पोषण के लिए बहुत अच्छा होता है। यह खट्टा फल आपके शरीर में वसा को बढ़ाने वाली इंसुलिन के स्तर को कम करता है। इनमें फाइबर भी प्रचुर मात्रा में होता है। विशेषज्ञों के अनुसार जो लोग बचपन से ही ग्रेप फ्रूट का सेवन करते हैं उनमें डायबिटीज का खतरा बहुत कम हो जाता है।

फाइबर युक्त फल स्ट्राबेरी

घुलनशील फाइबर युक्त फल स्ट्राबेरी जल्दी पचने के कारण आंतों में आसानी से अवशोषित हो जाते हैं। विशेषज्ञों का भी मानना हैं कि फाइबर युक्त फल आंत को साफ रखने का काम करते हैं।

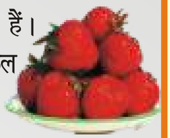

शुगर की मात्रा को संतुलित करे जामुन

डायबिटीज रोगियों के लिए यह फल बहुत ही लाभकारी है। डायबिटीज के मरीज अगर जामुन के बीज को पीसकर एक गिलास पानी में डालकर पीयें। जामुन स्टार्च को शुगर में परिवर्तित नहीं होने देता और रक्त में ग्लूकोज के स्तर को भी संतुलित रखता है।

विटामिन सी से भरपूर कीवी

इस फल में विटामिन सी की मात्रा अधिक होने के कारण ये शरीर को कई रोगों से निजात दिलवाने में मदद करता है। यह जितना अन्दर से गुणकारी है उतना ही इसके छिलके में भी बहुत से गुण होते हैं। डायबिटीज से परेशान लोगों के लिए कीवी काफी फायदेमंद होती है।

खरबूजे का सेवन

डायबिटीज रोगियों के लिए खरबूजा एक औषधि की तरह काम करता है। इसमें ग्लाइसिमिक इंडेक्स ज्यादा होने के बावजूद भी फाइबर बहुत अधिक मात्रा में होता है, इसलिए यदि इसे सही मात्रा में खाया जाए तो अच्छा होता है।

अनानास

अनानास में विटामिन और मिनरल की भरपूर मात्रा होती है। जैसे विटामिन ए और सी, कैल्शियम, पोटेशियम और फास्फोरस भी इसमें मौजूद होते हैं। यह पैनक्रियाज में बनने वाले रस को नियंत्रित करता है जो पाचन क्रिया में आगे मददगार होते हैं। पैनक्रियाज में नियंत्रण के कारण हम डायबिटीज जैसी बीमारी से भी सुरक्षित रह सकते हैं।

औषधि है नाशपाती

नाशपाती में सेब की तरह औषधीय गुण पाए जाते हैं। नाशपाती में बहुत अधिक मात्रा में फाइबर और विटामिन की मौजूदगी के कारण यह डायबिटीज रोगियों के लिए औषधि की तरह काम करता है। इससे मीठा खाने की तलब नहीं लगती है।

साभार- अन्तर्जाल

सेवक से आचार्य

कथा सरित

धर्मपत्नी की कर्तव्य निष्ठा से एक सामान्य व्यक्ति भी विद्वान् बनकर यश एवं कीर्ति प्राप्त कर सकता है। प्रतिशोध का विलक्षण उपाय प्रस्तुत घटना में चित्रित है जिसका श्रेय नारी को है।

अवन्तिकापुरी का सभा भवन अत्यन्त भव्य लग रहा था क्योंकि आज वहाँ युवराज आदित्य सेन का आगमन था। इसलिये उसे सजाया गया था। ठीक समय पर युवराज उपस्थित हुए। सभा भवन के सम्मुख द्वारपाल चित्रक के संरक्षण में उन्होंने अपनी रेशम मढ़ी चरण पादुकायें छोड़ दीं और स्वयं सभा भवन के अन्तः प्रकोष्ठ में प्रविष्ट हो गये। द्वारपाल चित्रक ने देखा कि युवराज की पादुकाओं पर ओस कणों के साथ कुछ धूल के कण भी आ गये हैं अतः उसने उन्हें उठाकर अपने उत्तरीय वस्त्र (अंगोछा) से पौंछ देने का प्रयास किया। चित्रक का उत्तरीय वस्त्र मैला था अतः पादुकायें स्वच्छ होने के स्थान पर और मैली हो गईं।

युवराज अन्तः प्रकोष्ठ से अपना कार्य समाप्त कर बाहर निकले तो चरण पादुकाओं को मैला देखकर उनकी भौहें तन गईं। किसने मैली की हैं? उन्होंने रोष में कहा। चित्रक भयभीत होकर बोला- क्षमा करें महाराज यह भूल..........वाक्य जब तक पूरा हो कि चित्रक के कपाल पर उसी पादुका का तीव्र प्रहार हुआ। मस्तक फट गया रक्त बहने लगा। आदित्य सेन को थोड़ी सी भूल भी सहन नहीं हुई और उन्होंने द्वारपाल की पूरी बात तक नहीं सुनी। वह राजभवन चले गये और चित्रक अपमानित प्रतिशोध की ज्वाला में दग्ध अपने घर पहुँचा।

चित्रक घर पहुँचकर कई दिन तक युवराज से उनके अनुचित व्यवहार का बदला कैसे लिया जाय यही सोचता रहा। कई दिन उसने अन्न जल भी ग्रहण नहीं किया। प्रतिशोध की ज्वाला में ही जलता रहा। उसकी पत्नी कुशला ने समझाया- 'स्वामी प्रतिशोध की भावना अग्नि की तरह है। यह जहाँ भी रहती है, शक्ति नष्ट करती है। यदि आपको युवराज से अपने अपमान का बदला ही लेना है तो उसका उपर्युक्त मार्ग मैं बताती हूँ। उठिये और यह मलिनता त्याग कर पहले स्वस्थ्य हूजिए।'

पत्नी के उद्बोधन से चित्रक सावधान हो उठकर निवृत्त हुआ, स्वस्थ हुआ। पत्नी ने उसे विद्या अध्ययन हेतु वाराणसी भेजने का प्रबन्ध कर दिया।

काशी के विद्वानों के चरणों की छाया में बैठकर चित्रक ने १० वर्ष तक तप एवं कठिन परिश्रम से विद्याध्ययन किया। जब वे काशी से लौटे तो उनके पाण्डित्य की ख्याति फैल गई और अब वह चित्रक से आचार्य चित्रक के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

उधर युवराज आदित्यसेन महाराज आदित्यसेन हो गये। उसी समय राजमाता अस्वस्थ हो गईं और औषधोपचार से जब उन्हें संतोषजनक लाभ नहीं हुआ तो उनके लिए यज्ञ चिकित्सा का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा की बात हुई तो उस समय आचार्य के रूप में विख्यात् चित्रक को ही यज्ञ का ब्रह्मा नियुक्त किया गया।

उन दिनों लोग आचार्य को महाराजाओं से अधिक सम्मान देते थे। स्वयं राजा भी आचार्यों का बहुत सम्मान करते थे। चित्रक चाहते तो आदित्यसेन से अपने अपमान का बदला ले लेते, किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, अपितु उन्होंने महाराज की चरण पादुकायें माँग लीं और प्रतिदिन उनकी पूजा करने लगे। एक दिन आदित्यसेन ने पूछा- आचार्य चरण पादुकायें कोई पूजा की वस्तु है? फिर मैं आपका गुरु भी तो नहीं हूँ। इन पादुकाओं से आपका लगाव समझ में नहीं आता?

चित्रक ने कहा महाराज इनकी कृपा से ही आज मैं इस पद पर विभूषित हुआ हूँ। आपने यही पादुका मेरे सिर पर मारी थी। मैं प्रतिशोध से जल उठा। संभव था आवेश में मुझसे कोई अपराध हो जाता। मेरी पत्नी ने प्रतिशोध के लिए मुझे काशी भेजा उसी का फल है आपका द्वारपाल आज इस यज्ञ का ब्रह्मा है।

इस विलक्षण प्रतिशोध और चित्रक की पत्नी की कुशलता से आदित्यसेन पराभूत हो उठे। उन्होंने चित्रक का बड़ा सम्मान किया और उन्हें राजपुरोहित के पद पर आसीन कर अपने को धन्य माना।

साभार- हितोपदेशक

सत्यार्थ-पीयूष

राज्य की युद्धनीति

सुरक्षा एवं सैनिक व्यवस्था- आन्तरिक शान्ति स्थापना के साथ-साथ प्रजाजनों की बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा भी राज्य का प्रमुख दायित्व है। राज्य की सुरक्षा के लिए महर्षि जी ने सुगठित और बलशाली सेना के गठन का निर्देश दिया है तथा वेदों के आधार पर अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र और युद्ध की विधियों का वर्णन किया है। बिना युद्ध के ही दूसरों से अपने राज्य की सुरक्षा और दूसरे राज्य पर अधिकार आदि की विधियाँ भी उन्होंने बताई हैं परन्तु यदि युद्ध अनिवार्य हो

जाए तो सैन्य शक्ति इतनी अनुशासित और सुदृढ़ हो कि वह शत्रु के छक्के छुड़ा दे। महर्षि ने दुर्ग निर्माण, युद्ध के समय ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातों, व्यूह रचना, सन्धि-विग्रह आदि पर विशद् प्रकाश डाला है। यहाँ पर केवल संक्षिप्त सा विवरण उस सम्बन्ध में देना उचित है। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं-

कृत्वा विधानं मूले तु..................कष्टतरो रिपु:।।

- मनु. ७-१८४ से १८६

जब राजा शत्रुओं के साथ युद्ध करने के लिए जावे, तब अपने राज्य का प्रबन्ध, और यात्रा की सब सामग्री यथाविधि करके, सब सेना, यान, वाहन, शस्त्रास्त्रादि पूर्ण लेकर, सर्वत्र दूतों अर्थात् चारों ओर के समाचारों को देनेवाले पुरुषों को गुप्त स्थान करके शत्रुओं की ओर युद्ध करने को जावे। उन्होंने तीन प्रकार, मार्गों अर्थात् स्थल, जल और आकाश मार्गों का प्रयोग करने का विधान भी प्रस्तुत किया है और अपने भीतर के शत्रुओं से भी सावधान रहने को कहा है। इसी क्रम में वे आगे लिखते हैं कि (मनु. ७-१८७ से १९२, १९४ से १९६, २०३, २०४) युद्धविद्या में सभी सैनिक पारंगत होने चाहिए। अनेक प्रकार की व्यूह रचना करके तथा अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का पूरे मनोयोग से प्रयोग करके अपनी विजय को सुनिश्चित करें। राजा एवं सेनाध्यक्ष को अपने शत्रु एवं मित्र की पहचान भी होनी चाहिए। सेनापति वा समस्त सैनिक समस्त गुणों से परिपूर्ण होने चाहिए तथा उन्हें यह विवेक होना चाहिए कि किस समय किन शस्त्रों का प्रयोग करना है ताकि जन सामान्य नाहक ही पीड़ित न हों। यही नहीं उन्हें इतना भी विवेक होना अपेक्षित है कि युद्ध में विजय प्राप्ति के पश्चात् पराजित शत्रु के साथ यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए। ऐसा करना 'धर्मयुक्त' राजनीति कहलाती है। पराजित शत्रु के साथ ऐसे पुरुष रक्खें कि जिससे पुनः उपद्रव न हो, और जो हार जाए उसका सत्कार प्रधान पुरुषों के साथ मिलकर रत्नादि उत्तम पदार्थों के दान से करे और ऐसा न करे कि जिससे उसका योगक्षेम भी न हो। उसको बंदीगृह में रखना पड़े तो भी चिड़ावें नहीं, न हँसी और ठट्ठा करें। रघुकुल में श्रीराम ने रावण को जीतकर लंका का राजा विभीषण को बनाया था। उसी प्रकार "योगक्षेम" का वहन करने की परम्परा से प्रभावित होकर 'रघुवंश' में लिखा है-

'आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुनामिव।'

राजा, सेनापति तथा सैनिकों आदि के गुणों का वर्णन हमें वेद में (ऋ. १-३९-२, १-७१-१, १-८४-८, ६-६६-१, १-३९-३, ८-४५-४०, यजु ०१०-१० से १४, २९-३९, अर्थव. ११-१०-२१, ११-१०-१ व २, ११-९ पूरा सूक्त, ५-२१-१, ६, १२ अथर्व. ३-२-५) अनेक स्थानों पर भी मिलता है।

दूत/गुप्तचर- राज्य की सुरक्षा तथा युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए दूत की अहम भूमिका मानी गई है। महर्षि जी इस सम्बन्ध में लिखते हैं-

स ताननुपरिक्रामेत्सर्वानेव सदा स्वयम्।
तेषां वृत्तं परिणयेत्सम्यग्राष्ट्रेषु तच्चरै:।। - मनु. ७/१२२

जो नित्य घूमने वाला सभापति हो, उसके अधीन सब गुप्तचर अर्थात् दूतों को रक्खे। जो राजपुरुष और भिन्न-भिन्न जाति के रहें, उनसे सब राज और प्रजा पुरुषों के सब दोष और गुण गुप्तरीति से जाना करे। जिनका अपराध हो उनको दण्ड, और जिनका गुण हो उनकी प्रतिष्ठा सदा किया करे। गुप्तचर के गुण के बारे में वे लिखते हैं-

दूतं चैव प्रकुर्वीत.........राज्ञः प्रशस्यते।। - मनु. ७/६३,६४

जो प्रशंसित कुल में उत्पन्न, चतुर, पवित्र, हाव भाव और चेष्टा से भीतर हृदय और भविष्यत् में होने वाली बात को जाननेहारा, सब शास्त्रों में विशारद-चतुर है, उस दूत को ही रखे। वह ऐसा हो कि राजकाम में अत्यन्त उत्साह, प्रीतियुक्त, निष्कपटी, पवित्रात्मा, चतुर, बहुत समय की बात को भी न भूलने वाला, देश और कालानुकूल वर्तमान का कर्ता, सुन्दर रूप युक्त, निर्भय और बड़ा वक्ता हो, वही राजा का दूत होने में प्रशस्त है।

सम्पादक- अशोक आर्य

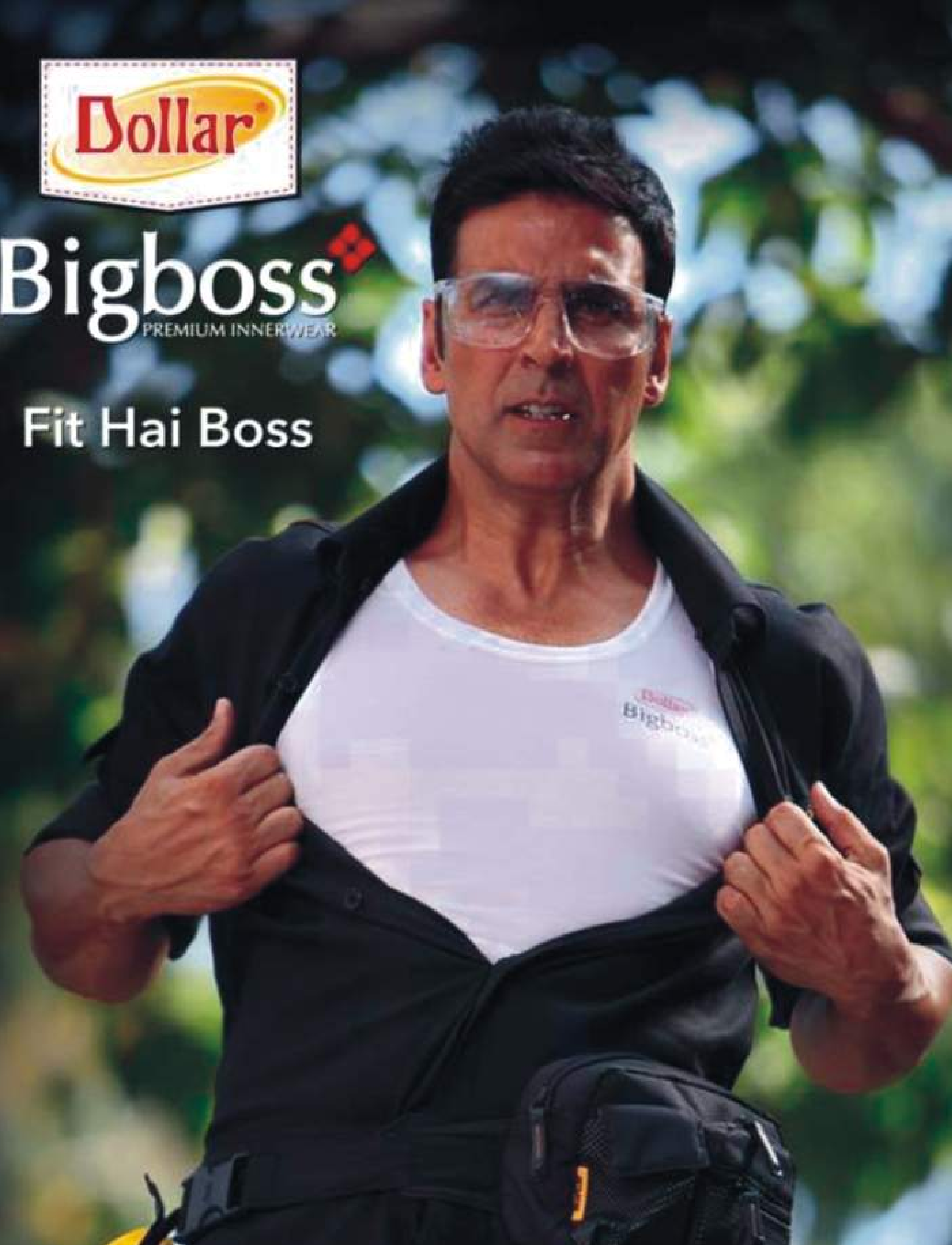
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

।।ओ३म्।।

20 वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

नवम्बर 4 5 6 2017

पधारें नवलखा महल, उदयपुर

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर